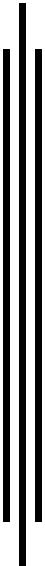


ज़िंदू गी

मुफ्त...या संवेदनशील!

(जीवन आधारित तथ्यों पर सत्यकथा)



सम्पत सारस्वत 'बामनवाली'

मण्डप्राण प्रकाशन, बीकानेर



महाप्राण प्रकाशन
लेघा कॉलोनी, श्रीरामसर,
बीकानेर-३३४००१ (राज.)
E-Mail.- :mahapranprakashan@gmail.com
Mob. No.:9799305760, 9783394068, 9602771955

:: मुद्रक ::
हर्षिता प्रिन्टर्स, बीकानेर (राज.) # 8875087222

संस्करण : प्रथम, 2021

मूल्य : ₹ 120.00

कम्प्यूटर ग्राफिक्स और आवरण : सुनील कुमार लोहमरोड 'सोनू'

ISBN :

©सर्वाधिकार लेखकाधीन

Zindgi Muft ya Samvedansheel
By Sampat Sarswat 'Bamanwali'
Rs. 120.00

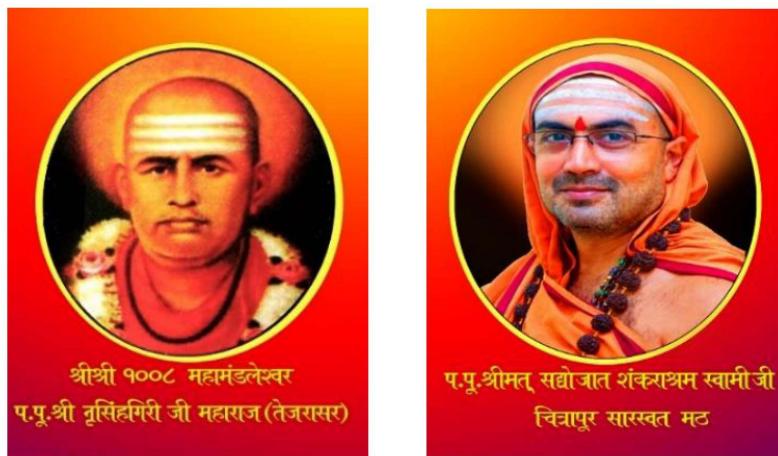
Sale of this book without a front cover may be unauthorized. If this book is cover less, it may have been reported to the publisher as "unsold or destroyed" and neither the author nor the publisher may have received payment for it.

DISCLAIMER

This book is designed to provide practical ways to live a better life. It is no way serves as a substitute for professional counseling or therapy. Every effort has been made by the author, editor, and publisher to produce a complete and accurate book. The purpose of this book is to motivate and inspire.

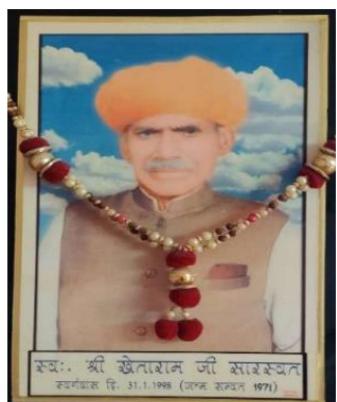
WARNING

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted, in any form or by any means, without permission. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.



समर्पितः-

ये मेरी पुस्तक समर्पित है मेरे परम् पूज्य गुरुदेव, मेरे मार्गदर्शक, स्वामीजी को जिन्होंने अपने तेज व बल के आधार पर मुझे सकारात्मक राह दिखाई, परम् पूज्य स्वामी जी के आशीर्वाद व रचने के बगैर ये मुकाम हासिल करना असंभव था। धैर्य आत्मचिंतन स्वविवेक संयम चेतना जैसे घटकों को जागृत करने में स्वामी जी का आशीर्वाद रहा। जीवन को सरल व प्रगतिशील राह दिखाने के लिए हमेशा आपका ऋणी रहूँगा।



मैं कृतज्ञ रहूँगा मेरे दादाजी-दादीजी रव. खेताराम जी सारस्वत व रव.
गोमतीदेवी सारस्वत जी का जिनके आशीर्वाद से मुझे आज के दिल ये सौभाग्य प्राप्त
हुआ। जीवन जीने की इनकी परिपाटी का अनुसरण करके जीवन के अर्धसत्यों का
ज्ञान हुआ जो भौतिक जीवन जीने में सहायक साबित हुआ। आज हर पल इनके चरणों
में सादर समर्पित।

धन्यवाद

पिताजी-श्री तोलाराम जी सारस्वत, माताजी-श्रीमती उमादेवी सारस्वत,

चाचाजी-श्री बीरुरामजी-देवकीदेवी, भवानीशंकरजी-सीतादेवी,

मेरी पत्नी-श्रीमती राखी,

बहन-बहनोई- मंजू-नवरतन जी, माया-रोहित जी, पूजा-शैलेषजी, ललिता-स्तोषजी,

प्रियंका-पीयूषजी, सुशीला-राहुल जी,

भाई- भरत-पंकज

मेरी बेटियां- कनिका, भूमिका, परिधि,

बेटा-ऋषि,

भांजियां- एंजल ओझा, आरथा ओझा

भांजे- तक्ष ओझा, हिमांशा ओझा

गुरुभाई डॉ. रामनिवास जी सारस्वत (सपरिवार) व अन्य तमाम बंधु बांधवों को बहुत बहुत धन्यवाद जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग की भावना रखी व मुझे मेरे जीवन के अनुभवों को शब्दों में पिरोने में सहयोग किया, किसी प्रकार से कोई बंधु का नाम छूट गया हो तो सविनय क्षमा, अगले संरकरण में उनका धन्यवाद जरूर ज्ञापित करेंगा।

अनुक्रम

(जीवन आधारित तथ्यों पर सार्थक अनुभव)

- | | | |
|-----|-----------------------|-----|
| 1. | वरदान संघर्ष से भरपूर | 1. |
| 2. | महत्वकांक्षा | 2. |
| 3. | त्याग व बलिदान | 3. |
| 4. | चिंतन व मनन | 4. |
| 5. | निःरता | 5. |
| 6. | आत्मविश्वास | 6. |
| 7. | विश्वास | 7. |
| 8. | निर्णायक मोड़ | 8. |
| 9. | बेबाकी या अंदाज | 9. |
| 10. | अपनों का सहयोग | 10. |
| 11. | जीवन एक प्रस्तुति | 11. |
| 12. | आगे बढ़ने की ललक | 12. |
| 13. | जीतने की चाहत | 13. |
| 14. | लक्ष्य की ओर अग्रसर | 14. |
| 15. | क्षमता का आँकलन | 15. |
| 16. | असफलता का डर | 16. |
| 17. | जीवन के घटक | 17. |
| 18. | जीवन एक तुलना | 18. |
| 19. | स्पर्धात्मक पल | 19. |
| 20. | सीखने की ललक | 20. |
| 21. | माहौल का असर | 21. |
| 22. | मित्रों की भूमिका | 22. |
| 23. | चुनौतियों से सामना | 23. |
| 24. | सपनों की पराकाष्ठा | 24. |
| 25. | रनेह का समावेश | 25. |
| 26. | रिश्तों की बारीकी | 26. |
| 27. | अपनेपन का अहसास | 27. |

28.	स्वाभिमान का पक्षधर	28.
29.	लक्ष्यप्राप्ति की हौड़	29.
30.	स्वार्थ की बूंटी	30.
31.	निःस्वार्थता के भाव	31
32.	वादों पर टिकी जिंदगी (जीवन)	32.
33.	असंभव की सीमा	33
34.	अकेलेपन का मर्म	34
35.	समाजवाद या राष्ट्रवाद	35
36.	रोमांचकता का पुलिंदा	36
37.	क्रोध का जमावड़ा	37
38.	हर पल-एक शिक्षक	38
39.	अपनेपन की लड़ाई	39
40.	रिश्तों की गहराई	40
41.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य का असर	41
42.	सच की गवाही	42
43.	आत्मा की पैरवी	43
44.	अपनों की तरफदारी	44
45.	अनुभव-एक सीख या धोखा	45
46.	जस्तरत की जवाबदारी	46
47.	कर्तव्यों का हनन	47
48.	नैतिकता से किनारा	48
49.	मानवता से दूरी	49
50.	मैं ही क्यों करूँ	50
51.	जिम्मेदार कौन	51
52.	सफलता किसकी	52

मेरी बात

प्रिय दोस्तों यह पुस्तक आपके हाथों में देते हुए मुझे कितनी खुशी हो रही है उसे मैं बयान नहीं कर सकता क्योंकि यह वो खजाना है जो मुझे शक्ति साहस और प्रेरणा देता है। जीवन के अनेक वाकियों ने ही मुझे यह साहस और प्रेरणा दी कि मैं यह किताब आपके सामने रख सका।

इस पुस्तक में पिरोये गए मोती मैंने कहाँ से और कब-कब चुनें, इसके बारे में मैं कुछ नहीं लिख पाऊँगा, लेकिन ये मेरे लिए बहुत अनमोल हैं, इन मोतियों ने मुझे उस समय चमक दी जब मैं किसी परेशानी में या विपरीत परिस्थिति में घिरा। मुझे याद है एक बार न जाने किस बात को लेकर मेरे एक दोस्त ने शेर सुनाया-

कौन कहता है कि आसमान में सुराख नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।

इन दो लाइनों ने मेरे लिए क्या किया कि मेरे साहस को जैसे बल मिल गया। पढ़ने की मेरी चाह ने मुझे अनेक हिंदी, उर्दू व गुजराती भाषा की किताबें पढ़ने का रास्ता दिखाया। इन्होंने मेरा एक विशेष नजरिया विकसित होने में मदद की, आज भी जब कभी मैं इन्हें पलटकर देखता हूँ तो खुद को अपने लक्ष्य के ज्यादा नजदीक पाता हूँ। ऐसे ही एक बार मैंने एक लाइन ढीवार पर लिखी पढ़ी-

चल ऐ नजीर
इस तरह से कारवाँ के साथ,
जब तू न चल सके तो तेरी दास्ताँ चले

हालाँकि मैं नहीं कह सकता कि यह पंक्ति किसने और क्यों लिखी थी लेकिन इसे पढ़कर मैंने खुद को सोच में पाया, ये पंक्तियाँ मार्गदर्शक थी मेरी आगे की जिंदगी के लिए-

जो पंक्तियाँ मैंने यहाँ-वहाँ पढ़ी या सुनी उनके लेखकों के नाम मैं नहीं जानता और इसलिए नहीं दे सकता लेकिन अहसान और आभार जाता सकता हूँ, मैं तो सिर्फ इतना जानता हूँ कि वो किसी के भी हो, मेरे लिए अनमोल है।

हो सकता है, कुछ पंक्तियाँ मैं उस रूप में नहीं लिख पाया जिस रूप में मैंने उन्हें लिखा, उनमें शब्द भी बदल गए हों। ऐसे ही न जाने कब-कब और कैसे-कैसे मैं ये मोती चुनता चला गया, चुनता चला गया, चुनता चला गया....

01. वरदान-संघर्ष से भरपूर

सृष्टि का बेहतरीन उपहार है जिंदगी और उसी जिंदगी का अहम् पड़ाव है इंसान...! जो कि एक यात्रा का हिस्सा, जिसमें पग-पग पर संघर्ष, एक पड़ाव पर किया, दूसरा शुरू, दूसरे के बाद अगला पड़ाव, एक के बाद एक घटक, जिससे खट्टे-मीठे व संघर्षशील पड़ावों का समावेश, जीवन एक वरदान या अभिशाप यह तो प्रत्येक व्यक्ति के कर्मां पर निर्भर करता है, पर हर कर्म में संघर्ष का अपना एक किरदार है जो पथिक की मंजिल तय करता है।

जीवन में संघर्ष की बुलंदियों को आधार बनाकर लक्ष्य प्राप्ति के प्रयासों को ही संघर्ष जैसा अनूठा नाम दिया है, मानव का संघर्ष ही यह तय करता है कि उसे राजा बनना है या रंक, संघर्ष कि पाठशाला में अच्छा रहने वाला व्यक्ति ही अपने लक्ष्य को साधता है। संघर्ष में योजना का अभाव भी लक्ष्य की परिपूर्णता को खंडित करता है। किसी भी मनुष्य द्वारा आत्मि संघर्ष के प्रयासों को ईश्वर भी कभी खाली नहीं जाने देता है।

जीवन में संघर्ष को लक्ष्य प्राप्ति की सीढ़ी बताया है। जिसके घटक तय करते हैं कि आपकी सफलता का पैमाना क्या है। अब हम पर निर्भर करता है कि हम संघर्ष के दौरान सामने आये घटकों को कितनी गंभीरता से साथ लेकर आगे बढ़ते हैं। एक सुखद जीवन के लिए भरभूर संघर्ष का होना अनिवार्य है, वरना ये जिंदगी एक बैरंग पोर्टकार्ड की तरह हो जाएगी।

02- महत्वकांक्षा

आम जीवन में सपनों को एक विशेष स्थान दिया गया है। उन सपनों को बुनने से लेकर सच करने की प्रक्रिया को ही जीवन का नाम दिया गया है। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में दिखावे ने अपना एक अलग स्थान बनाया है। जिसके तहत मनुष्य को हर एक सुख सुविधा बहुत ही कम ऊर्जा को खर्च करके हासिल करने की महत्वकांक्षा रहती है। अपने जीवन को खुले आसमान में सैर करते हुए पक्षी की भाँति पंख फैलाये हर मंजिल को तय करने की उम्मीद ही महत्वकांक्षा है।

सकारात्मक पहलुओं को हासिल करने तक महत्वकांक्षा जीवन को प्रगति की ओर अग्रसर करती है। परन्तु नकारात्मक प्रतिक्रिया को प्रवेश मिलते ही यही महत्वकांक्षा जीवन को एक गर्दिंश में धकेलने की ओर प्रयासरत हो जाती है।

रोचक जीवन के लिए महत्वकांक्षा जरूरी है परन्तु...

किसी भी व्यवस्था को हासिल करने के लिए घटकों पर मंथन व अभ्यास जरूरी है जो जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। आज दिखावे के दौर में योग्यता व काबिलियत की बजाय महत्वकांक्षा को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। जो कि मानव विकास के लिए न केवल नुकसानदेह है अपितु भावी पीढ़ी हेतु अति चिंताजनक है।

आज के दौर में इंसान अपनी जरूरतों को अपनी काबिलियत पर हावी होने दे रहा है, जिससे व्यक्ति की महत्वाकांक्षा बढ़ती जा रही है। उन उम्मीदों को पूरा करने में सुख की बजाय दुःख को न्योता दिया जा रहा है।

03. त्याग व बलिदान

जीवन की व्यवस्थाओं का दौर आम जीवन पर इतना हावी हो चूका है कि एक दूसरे के सहयोग की कल्पना मात्र ही एक सपने के समान है। त्याग की पराकाष्ठा समाप्त सी हो गयी है। इस सदी में हर व्यक्ति को अपना आधार तय करना है। उस आधार को बनाये रखने के लिए ढौड़ धूप जारी रहती है। जिसमें ना चाहते हुए भी त्याग व बलिदान की पराकाष्ठा को अनदेखा किया जाता है।

जीवन में पहला त्याग हमें हमारी माँ से सीखने की जरूरत है। जिसने अपनी सुंदरता का बलिदान देते हुए ममत्व को ग्रहण किया। माँ ने अपने जीवन के हर सपनों और अन्य प्रयासों पर रोक लगा दी केवल हमें इस दुनिया में लाने के लिए। माँ के इस त्याग के पैमाने को तय कर पाना हर किसी के बास की बात नहीं है।

जीवन में दूसरा त्याग हमें हमारे पिता से सीखने की जरूरत है। जिन्होंने हमारे पालनपोषण व हमारे भविष्य को संवारने के लिए अपने खुद के हर सपने को अपनी छोटी सी दुनिया को काल कोठरी में बंद कर दिया।

जीवन में तीसरा त्याग हमें हमारी पत्नी या बहन से सीखना चाहिए जिन्होंने अपने माता-पिता के सम्मान व संस्कारों को जिंदा रखने के लिए एक झाटके में उस आँगन को छोड़ दिया, जिसमें उसके बचपन की सारी यादें जुड़ी हुई थीं। ऐसे त्याग व बलिदान की व्याख्या करना इतना आसान नहीं। इससे सर्वश्रेष्ठ त्याग व बलिदान का सच्चा उदाहरण नहीं हो सकता।

जो जिंदगी के आधे पड़ाव के बाद एक अलग से नई दुनिया बनाने की ओर अग्रसर होती है।

04. चिंतन व मनन

जिंदगी सच में एक गमले के समान है, जिसमें आपको स्वयं तय करना है कि आपको तुलसी का पौधा लगाना है या नीम का...

सबका अपनी-अपनी जगह अपना-अपना महत्व है, परन्तु जीवन का मुख्य पड़ाव ये भी है कि अब की इस नई सदी ने खुद का होना वजूद बना तो रखा है जो ना केवल आधुनिक है अपितु साथ साथ ढेर सारे सपनों का संचरण लेकर चल रही है। प्रत्येक कदम पर सोचने का समय है। प्रत्येक प्रयास पर सफलता व असफलता पर चिंतन करने का समय है। जीवन के निर्णयों पर चिंतन करते हुए फायदा या नुकसान का संतुलन बिठाना ही जीवन की सच्चाई है।

आज के इस आधुनिक दौर में जहाँ रिश्ते तार-तार हो रहे हैं, वहीं उन रिश्तों को लोक संस्कृति व लोकाचार हेतु सहेजकर रखना भी अपने आप में एक चुनौती है। प्रत्येक प्रयास पर आत्म चिंतन बहुत जरूरी है तथा सफलता व असफलता जो कि जीवन में किये गए प्रयासों का एक हिस्सा है।

उस पर अब मंथन करने का समय है ताकि किसी भी पड़ाव को हासिल करने में आये अवरोधकों का मनन किया जा सके। जीवन को सुखद व क्रियनशील बनाने के लिए समय-समय पर व्यक्तित्व व उम्र पर चिंतन व मनन होना जरूरी है ताकि अपने लक्ष्यों को निर्धारित कर सको।

एक व्यक्ति अगर अपने कार्यों, योग्यताओं व अपनी व्यवहार कुशलताओं पर ध्यान से चिंतन करे तो निश्चित रूप से न केवल निजी रूप से खुद में निखार ला सकते हैं, बल्कि हमारी गलतियों या खूबियों पर मनन करके व्यक्तिगत जीवन को सुखद व प्रेरक बना सकते हैं। एक सफलतम व्यक्तिगत जीवन के लिए खुद पर चिंतन व मनन जरूरी है।

05. निःडरता

नादान बचपन के गुजरने के बाद जीवन एक अलग प्रकार की व्यवस्था में आ जाता है। जिसमें किसी कार्य को करने के विश्वास से ज्यादा उस कार्य के प्रति असफलता का डर पैदा हो जाता है। कार्य की सफलता का डर, रिश्तों को संजोने का डर, आधिक विकास को बनाये रखने का डर, जीवन में बौद्धिक व मौलिक सिद्धांतों के मूल्यों का डर, ये जीवन के हर पड़ाव में अपना-अपना रूप दिखाने में लगे रहते हैं।

इन सब घटकों के प्रति निश्छल तरीके से अपनी कार्य सिद्धि की ओर बढ़ते जाना व तय लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयासों का नाम ही निःडरता है। जिसके तहत न केवल आत्मविश्वास को बल मिलता है, बल्कि लक्ष्य प्राप्ति के प्रति असफलता के मापदंड भी हक्मजोर हो जाते हैं तथा सफलता सरलता से आपके रास्ते को बनाने का कार्य शुरू कर देती है।

निःडरता से समना करो हर परिस्थिति का, खतरा लें, अगर मंजिल पाना है। रास्ते में कांटे ही कांटे हैं, जोखिम लेकर ही आगे बढ़ा जा सकता है। खुद के अंदर की दुनिया को जीना है।

किसी भी कार्य को करने की श्रद्धा व आत्मविश्वास किसी भी प्रकार के नकारात्मक घटकों को अपना स्थान लेने नहीं देता है। जीवन के बड़े से बड़े पड़ाव को हासिल करने हेतु निःडरता का अहम् किरदार रहता है। किसी भी प्रकार की संजीदगी जो कि हमारी निःडरता पर ही निर्भर करती है।

जीवन में किसी भी हालात में आपकी भूमिका व उसको झेलने के आपके निःडरता पूर्ण निर्णयों पर निर्भर करता है कि आप हालातों को किस कदर संभाल सकते हैं। आम जीवन में बहुत मोड़ ऐसे आते हैं जब आपके निर्णय लेने के अंदाज पर भी आपके व्यक्तित्व का आंकलन किया जाता है।

06. आत्मविश्वास

संयम के अभाव के इस दौर में लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर प्रयासों के प्रति आत्मविश्वास ही एकमात्र साथी होता है, जो प्रत्येक कदम पर सफल होने की कामना करता है। आज के प्रतिरप्थर्धा के इस दौर में जहाँ हर व्यक्ति का तुलनात्मक रखैया रहता है। उस स्थिति में एक आत्मविश्वास ही आगे बढ़ने को प्रेरित करता है। शिकायतों व कार्यशैली में शंका करने वालों के सामने आत्मविश्वास ही एक हथियार है। जिसके बलबूते आप विजय की कामना कर सकते हैं।

जब आप किसी लक्ष्य की तरफ अग्रसर होते हैं तब किसी तथाकथित अनुभवी अपने अनुभव की ढाल से आपके आत्मविश्वास को खंडित करने का प्रयास करते हैं, परन्तु उस पल आपका विवेक ये तय करता है कि आखिरकार सफलता किस ओर है। आत्मविश्वास कभी अनुभव आधारित नहीं हो सकता बल्कि अनुभव जरूर आत्मविश्वास आधारित हो सकता है।

अपने अंदर का विश्वास ही किसी व्यक्ति के लिए सफलता का मार्ग खोलता है। अगर आपके पास सारे संसाधन, क्षमता, योग्यता आदि हो लेकिन उसके ऊपर आपका विश्वास नहीं हो, तो सफलता आपसे उतनी ही दूर है, जितनी दूर समुद्र के किनारे बैठे व्यक्ति से मीठा पानी। हालांकि, हर तरफ के अभावों के बावजूद अगर किसी व्यक्ति के अंदर अपने आपको साबित करने का विश्वास है, यानी वह आत्मविश्वास से लबरेज है, तो उसे कामयाब होने से कोई नहीं रोक सकता। आत्मविश्वास एक ऐसा मंत्र है, जिसके आगे सारे संकट दूर हो जाते हैं।

दृढ़ इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति के सामने मुसीबतों का पहाड़ भी सपाट भैदान की तरह बन जाता है और जिनके पास इसकी कमी होती है वह छोटी-मोटी समस्याओं से भी इतने घबरा जाते हैं कि उससे बचने के उपाय ढूँढ़ते-ढूँढ़ते खुद ही अपने आस-पास के लोगों के लिए मुसीबत बन जाते हैं। इतिहास गवाह है कि कई लोगों ने केवल

अपने आंतरिक ताकत के बल पर ही साम्राज्य कायम किया। नहीं तो एक सामान्य से मुश्किया के घर में पैदा हुआ चंद्रगुप्त मौर्य कभी सम्राट नहीं बनता।

सफलता- जिस व्यक्ति में आत्म विश्वास होता है सफलता उस व्यक्ति के कदम चुम्ती है। हर क्षेत्र में लोग उसी व्यक्ति को परसंद करते हैं। जो विश्वास से भरा हो और दिए हुए कार्य को करने में सक्षम हो और अपनी बात लोगों को आसानी से समझा सके। जिस व्यक्ति में आत्म विश्वास होता है वह अकेला ही सौ के बराबर होता है। इतिहास में बहुत से ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने अपनी मेहनत और आत्म विश्वास के बल पर ही सफलता को प्राप्त किया है।

निष्कर्ष

आत्म विश्वास प्रत्येक व्यक्ति के लिए बहुत आवश्यक है। आत्मविश्वास की उत्पत्ति दृढ़ संकल्प से होती है। किसी भी व्यक्ति को चाहिए कि यदि वह कोई भी कार्य करने की ठान लेता है तो उसे खुद पर यकीन रखना होगा कि वह उसे सही तरीके से पूर्ण भी कर लेगा। व्यक्ति को किसी भी परिस्थिति में अपना आत्म विश्वास नहीं खोना चाहिए। आत्मविश्वास सफलता की चाबी है जिसे हर व्यक्ति के पास होना चाहिए।

आज के इस परिकल्पित दौर में बड़ी से बड़ी चट्टान को हटाने का कार्य केवल आत्मविश्वास ही कर सकता है। मन की स्थिरता व कार्य करने के प्रति गतिशीलता सफलता के पैमाने को तय करती है।

जब आप आत्मविश्वास से सरोबार होते हैं तो आपको जय-जय कार करने वाली भीड़ की किंचित मात्र भी जरूरत नहीं रहती क्योंकि आत्मविश्वास खुद आपके मनोबल को बढ़ाने के लिए सैंकड़ों सैनिकों को आपके भरोसे के रूप में आपके लक्ष्य को प्राप्त करने में लगा देता है।

07. विश्वास

जीवन का सबसे बेजोड़ पहलु है कि विश्वास आज भी अपना किरदार बड़ी ही विनम्रता से निभा रहा है। एक यही व्यवस्था है जिससे सकारात्मकता का भाव महसूस होता है। जीवन के परिपेक्ष्य में शास्त्र कहते हैं कि एक पल का भी भरोसा नहीं है। इसके बावजूद भविष्य निर्माण के सपने संजों लेते हैं इसी का नाम विश्वास है।

एक बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक हर मोड़ पर विश्वास ने अपनी अपनी भागीदारी निभाई है। एक पिता का पुत्र के प्रति, एक पुत्री का माँ के प्रति, भाई का बहन के प्रति, प्रत्येक रिश्ते में विश्वास ने रिश्तों को और ज्यादा मजबूती दी है। जीवन की रोमांचकता में विश्वास अपना योगदान समय-समय पर देता रहा है। जीवन के प्रत्येक घटक पर भले ही बचपन हो या जवानी, बुढ़ापा हो या साढ़गी भरा व्यवहार जीवन का मूल्यांकन प्रत्येक मोड़ पर होता रहा है। जीवन की प्रत्येक परीक्षा में विश्वास ने सहयोगी की भूमिका में खुद को प्रथम पंक्ति में खड़ा किया है।

प्रतिरप्धि के इस दौर में जहाँ हर रिश्ता व्यावसायिक हो गया है वहीं काफी हृद तक विश्वास ने काफी रिश्तों को बांधकर रखा है। आज भी सकारात्मक व्युहरचना हेतु सफलता के आयाम लिखने के लिए एक दूसरे के प्रति सहयोग की भावना की उपज भी भरोसे की वजह से कायम है। जीवन के हर मोड़ पर विश्वास अनिवार्य है।

संस्कृत में कहा गया है कि मन ही मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण है। ‘मन एवं मनुष्याणां कारणं बंधा न मोक्ष्यो’। मन की स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है। मन ही व्यक्ति को सांसारिक बंधनों से बाँधता है। मन ही उसे इन बंधनों से छुटकारा दिलाता है।

मन ही मन उसे अनेक प्रकार की बुराइयों की ओर प्रवृत्त करता है, जो मन ही उसे अज्ञान से ज्ञान की ओर अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। भाव यह है कि मन चाते तो क्या नहीं कर सकता। इसीलिए एक विचारक ने कहा है- ‘जिसने मन को जीत लिया बस

उसने जीत लिया संसार'। सृष्टि के अन्य चराचरों का केवल मानव के पास ही इच्छा-अनिच्छा, संकल्प-विकल्प, अपेक्षा-उपेक्षा आदि भावनाएँ जन्म लेती हैं। मन में मनन करने की क्षमता है। इसी कारण मनुष्य को चिंतनशील प्राणी कहा गया है। संकल्पशील रहने पर व्यक्ति कठिन से कठिन अवरथा में भी पराजय स्वीकार नहीं करता तो इसके टूट जाने पर छोटी सी विपत्ति में भी निराश होकर बैठ जाता है।

इसीलिए कहा है- “दुख-सुख सब कहँ परत हैं, पौरुष तजहू न मीत, मन के हारे हार है मन के जीते जीत” अर्थात् दुख और सुख तो सभी पर पड़ते हैं, इसीलिए अपना पौरुष मत छोड़ें क्योंकि हार-जीत तो केवल मन के मानने अथवा न मानने पर ही निर्भर होती है।

ऐसे अनेक उदाहरण हमारे समक्ष हैं जिनमें मन की शक्ति केवल व्यक्ति ने असम्भव को संभव कर दिखाया और पराजय को जीत में बदल दिया। अकबर की विशाल सेना के समक्ष भी केवल मन की शक्ति के बल पर महाराणा प्रताप ने उसकी सेना को नाकों चने चबवा दिए। शिवाजी अपने थोड़े से सैनिकों के साथ मन की शक्ति के सहारे ही तो औरंगजेब से लोहा ले सके। मन की शक्ति के बल पर ही कमजोर दिखने वाले गांधी अंग्रेजों को भारत से निकालने में सक्षम हुए। इसी शक्ति के बल द्वितीय विश्व युद्ध में बरबाद जापान पुनः उठ खड़ा हुआ और कुछ ही समय में पुनः उञ्जत राष्ट्रों की श्रेणी में आ गया।

इसी प्रकार के अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं-

संरकृत में कहा गया है- “मनोयस्य वशे तस्य भवेत्सर्व जगद्यशे मनु ज्ञास्तु वशे योअसि सर्वजगतों वशे” अर्थात् जिसने अपने मन को वश में कर लिया किंतु जो मनुष्य मन को न जीतकर स्वयं उसके बहाव में हो जाता है। उसने सारे संसार की अधीनता स्वीकार कर ली।

अंग्रेजों ने अपने मन की शक्ति के बल पर दुनिया के अनेक देशों पर राज किया। इसके विपरीत विशाल देश भारत के अनेक राजा जब मन की शक्ति से हीन हो गए तो उन्होंने अंग्रेजों के सामने घुटने टेक दिए। मन को वश में करने के लिए मन की एकाग्रता आवश्यक है। मन को शक्तिसंपन्न बनाने के लिए हीनता की भावना को दूर करना आवश्यक होता है।

जब वानर दल सीता की खोज में निकले तथा उन्हें पता चला कि लंका का राजा रावण सीता को हर कर ले गया है, तो उनका पता लगाने के लिए समुद्र को लाँघना आवश्यक था। कुछ वानरों ने समुद्र लाँघने की शक्ति होते हुए भी मन की दुर्बलता आड़े आ गई और वे समुद्र लाँघन की हिम्मत न जुटा सके। यहाँ तक कि पवनपुत्र हनुमान के मन में भी दुर्बलता आ गई। उन्हें अपनी सफलता पर संदेह होने लगा तो जामवंत ने उन्हें उनके बल की याद दिलाई। जिसका आशय था उनके मन में उत्साह की भावना भरना। जैसे ही हनुमान ने अपने मन की शक्ति के सहारे अपने बल को पहचाना वे तैयार हो गए और समुद्र को लाँघ गए।

अतः हमारा कर्तव्य है कि हम अपने मन को कभी दुर्बल न होने दें, क्योंकि मन परम शक्तिसंपन्न है। अनंत शक्ति का स्रोत है। प्रेरणादायिनी शक्ति है, उत्साह एवं दृढ़ता का नियंता है और सभी कार्यों का संचालित करने वाला है। जय-पराजय, हानि-लाभ, यश-अपयश, सुख-दुख सब हमारे मन के कारण ही हैं। मानसिक बल शारीरिक बल से श्रेष्ठ होता है।

08. निर्णायक मोड़

आम तौरपर जीवनअपने आप में एक दिलचर्प यात्रा है क्योंकि जीवन में लिए गए कुछ निर्णयों ने जीवन को और रोमांचित व गतिशील बना दिया होता है। जीवन को खास बनाने में हमारे जीवनकाल में लिए गए कुछ फैसले जीवन के महत्व को बदलकर रख देते हैं। हमारे जीवन में अमूमन ऐसे अहम निर्णायक मोड़ आये होंगे जिसमें हमारे द्वारा लिए गए फैसलों से आज या तोहम संतुष्ट हैं या आज भी उस निर्णय के प्रति असंतोषित।

ये बहुत महत्व रखता है कि आपने अपने जीवन में कुछ फैसले जीवन के किस पड़ाव पर लिए हैं। उस समय परिस्थितियाँ क्या रही होंगी इन आधारों पर ही आपके द्वारा लिए गए फैसलों का असर माप सकते हैं।

उदाहरण स्वरूप भारतीय क्रिकेट टीम से पूर्व कप्तान एम एस धोनी अगर अपने जीवन में टिकट क्लेक्टर (रेलवे में) अपनी नौकरी जारी रखते तो शायद हम उनकी कलात्मक खेलने की पश्चिमति व क्रिकेट विश्वकप से वंचित रहते, वहीं दूसरी तरफ सचिन रमेश तेंदुलकर (सारस्वत) अगर गेंदबाजी को छोड़कर बल्लेबाजी के लिए विचार नहीं करते तो आज हम क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन की योग्यता से परिचित ना होते, सिने जगत की अगर बात करें तो रजनीकांत अगर बस कंडक्टर से आगे बढ़ने का निर्णय ना लेते तो दृष्टिकोण भारत व फिल्म जगत के सुपरस्टार कहे जाने वाले रजनीकांत की कला से हम परिचित ना होते, अमिताभ बच्चन व्यापार व राजनीति से सही समय पर निर्णय लेकर वापिस सिने जगत में ध्यान नहीं देते तो शायद आज इसी सदी के महानायक के रूप में उनका नाम नहीं आता।

पकौड़े बेचने व यमन में गैस रस्टेशन पर काम करने वाले धीरभाई अम्बानी अगर सही समय पर निर्णायक निर्णय नहीं लेते तो आज भारतीय अर्थव्यवस्था के आधार रत्नभ नहीं होते। जीवन में आपके आसपास सफल व असफल लाखों करोड़ों लोग मिल जायेंगे।

जिनके निर्णय ने जीवन के मायने तो बदले ही साथ-साथ पूरे भारत व विश्व में भी उनके निर्णयों की चर्चा रही है।

आपके जीवन में आये निर्णायक समय में सूझबूझ से लिए गए फैसलों से आप दुनिया बदलने की ताकत रखते हो। साथ ही साथ आपके जीवन का एक निर्णय जिसने आपको असफलता से परिचय करवाया हो वो भी आपकी जीवनशैली पर असर डाल सकता है।

जीवन बार-बार मौका देने का ही नाम है जो हर पल एक नया मौका आपके लिए तैयार रखता है यह आपकी समझशक्ति तय करती है कि आप जीवन के उस पड़ाव पर अपने किस तरह के अहम फैसले को लेते हो जो आपके जीवन में एक बेहतरीन निर्णायक मोड़ लेकर आये।

09. बेबाकी या अंदाज

यूँ तो जीवन एक ऐसी मिश्रित व्यवरथाओं का संतुलन है जिसमें जीवन का अनुभव खट्टा-मीठा है। जीवन में उतार चढ़ाव ये सब आम बात हैं। फिर भी आपके जीवन में कुछ पल आपके कार्य करने की शैली पर भी निर्भर करते हैं। आपके अंदाज व जीवन के किसी भी पड़व के प्रति आपके बर्ताव पर उस पड़व को भी कठोर या सहज बनाता है। जीवन में सबसे महत्वपूर्ण कार्यशैली है जो किसी भी कार्य की गुणवत्ता का आंकलन करती है।

जीवन में दुःख के समय उस दुःख को सहन करने व उस दुःख से बाहर निकलने के अंदाज पर यह निर्णय करता है कि आप मजबूत हुए हैं व टूट चुके हैं। वहीं दूसरी तरफ जीवन सुख या खुशी के प्रति आपकी बेबाकी या धैर्य उस सुख के आनंद को जीवन में और बढ़ा देता है। जीवन को गतिशील बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक सर्वश्रेष्ठ अंदाज अपना मापदंड तय करता है। आपकी बेबाकी आपके जीवन में आई कई खकावटों को दरकिनार करने में सहायक रहती है।

बेबाकी व जिद में बहुत ही पतला सा अंतर रहता है जिसे हम बड़ी ही चतुरता से समझकर आगे बढ़ना होता है ताकि हम हमारे जीवन को अति उत्तम स्तर पर निर्वहन कर सकें।

छह बच्चों की बचाई जान

छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में मजदूरी कर अपने परिवार का लालन-पालन करने वाले १७ वर्षीय मुकेश निषाद ने खलिहान (अनाजघर) में छह बच्चों की जान बचाई। जिसके लिए उन्हें राष्ट्रीय वीरता सम्मान से नवाजा गया। ग्राम भटगाँव, दुर्ग में बजरंग निषाद के खलिहान में आग लग गई जिसमें विभिन्न परिवार के छह बच्चे घिर गए। भीषण आग से धूँआ भर गया और सभी बच्चे घुटन महसूस करने लगे। सभी बच्चे रोने चिल्लाने लगे। उनकी हालत देख मुकेश अपनी जान जोखिम में डालते हुए आग लगे घर में घुसा और एक-एक कर सभी बच्चों को बाहर निकाल लिया। उसके परिवार में दो भाई और माँ हैं।

सात साल पहले उसके पिता का निधन हो गया। पिछले दस साल से वह पास के चावल फैक्टरी में मजदूरी कर रहा है और माँ स्कूल में चपरासी है। परिवार की जिम्मेदारी उठा रहे १७ साल के मुकेश से भविष्य की योजना पर पूछा तो कहा कि उसका सपना है कि उसके दोनों छोटे भाई पढ़ लिखकर बड़ा आदमी बने।

10. अपनों का सहयोग

इस ब्रह्माण्ड में विचरण करने वाले प्रत्येक प्राणी को अपने जीवन की सुदृढ़ता के लिए तालमेल बनाकर चलना जरूरी है। आसपास के माहौल के खबर होकर चलना प्रत्येक प्राणी का मौलिक दायित्व है।

एक ओर जहाँ मानव जीवन में आर्थिक सुदृढ़ता को प्राथमिकता दी है वहीं दूसरी ओर अलौकिक शक्ति मनुष्य को मिली है और वो हीं अपनों का सहयोग यहाँ अपनों की व्याख्या पारिवारिक सदर्यों के साथ हर उस मनुष्य से है जिसके साथ आत्मिक सम्बन्ध हो, जिसके फलस्वरूप मित्र, पड़ोसी, सहपाठी व अन्य हर वो व्यक्ति जो हमारे सुख दुःख में शरीक होता हो जो हमारी भावनाओं को समझ सकता हो, हमारी पीड़ा को अपनी पीड़ा समझकर उससे बहार निकलवाने का प्रयास करता हो, हमारे सुख में निरवार्थ शरीक होता हो, निश्वार्थ भाव से हमारे लिए मंगल कामनायें करने वाला व्यक्ति ही हमारा अपना है।

जिसका सहयोग एक कुशल व मंगलमय जीवन जीने के लिए अति आवश्यक है। र्वार्थ की इस दुनिया में प्रतिरप्ति का दौर चल रहा है, जहाँ सारे अपने हमें सँभालने वाले नहीं होते परन्तु सारे अपने गिराने वाले ही नहीं होते।

“मैं साथ हूँ” ऐसा कहकर आत्मविश्वास पैदा करने वाले लोगों को ये सहयोग भी किसी बड़े सहयोग से कम नहीं। सहयोग केवल आर्थिक ही नहीं होता है जो अर्थ देखकर सहयोग कि अपेक्षा रखे वो सहयोग की श्रेणी में भी नहीं आता है। २००९ में गुजरात भूकंप, २००७ में गुजरात में बाढ़ व २०२३ में उत्तराखण्ड में आई प्राकृतिक त्रासदी ने ये दिखा दिया कि आखिर अपनों का सहयोग क्या होता है। पूरे भारत भर से इस तरह की राष्ट्रीय निर्माण में अपनी अहम् भूमिका दर्ज कराई।

भारत भावनाओं का देश है।

11. जीवन एक प्रस्तुति

“मिटजायेगा गुनाहों का तबस्सुर इस जहाँ से,
गर हो जाये यकीं कि खुदा देख रहा है”

एक चित्रपट कि तर्ज पर जीवन अपनी प्रस्तुति देने में लगा है। आपकी जीवनी को एक फ़िल्म के रूप में आपके पास का वातावरण आपको देख रहा है। ऊपर की पंक्तियों से लेखक ये दर्शाना चाहता है कि बस हमें हमारे जीवन में यह मानते हुए चलना चाहिए कि हमारी हर गतिविधि पर किसी न किसी की नजर है। पंक्तियों के आधार पर लेखक जताना चाह रहा है कि गुनाह और गुनाह करने की नियत ही खत्म हो जाये अगर हमें पता चल जाये कि हमारी हर हरकत व कार्यशैली को ईश्वर स्वयं देख रहे हैं।

भविष्य में छिपे हमारे सपनों को साकार करने मे हम लगे रहते हैं परन्तु किरणत ईश्वर द्वारा कर्मों के आधार पर लिखी जा चुकी होती है। जिसे मानवीय जीवन के कर्मों के आधार पर थोड़ा बहुत संशोधन किया जा सकता है। जीवन की प्रस्तुति ऐसी हो जिसमें मौलिक व बौद्धिक जीवन के साथ-साथ आध्यात्मिक स्थिरता भी रहनी जरूरी है। जीवन की शुरुआत से लेकर जीवन के अंत तक एक ऐसी जीवनी हो जिसमें निरंतर अभ्यास हो। प्रेरणा हो व जागृति के साथ हम किसी के आत्मविश्वास का दृश्य बन सके ऐसा प्रयास होना चाहिए।

“करत करत अभ्यास जीवन सकल सरल”
इस पंक्ति के आधार अभ्यास जीवन को सरल बनाने हेतु जारी रहने चाहिए।

“लोटा”

मक्क बार की बात है कि एक कुटिया में एक संत अपने शिष्य के साथ रहते थे। वो रोज अपने दैनिक जीवन में लोटे का इरत्तेमाल करने के बाद उसे रेत से मांजते थे। वह समय खर्च करके बड़ी ही सिद्धत से लोटे को साफ करते थे। एक दिन शिष्य ने कहा - कि गुरुदेव, रोज रोज मांजने की बजाय कभी कभी पानी से साफ कर दिया करो”।

इस पर गुरुजी ने मुख्यतः हुए कहा कि - “ठीक है हम एक हफ्ता ऐसे ही करके देखते हैं।” और एक हफ्ते तक लोटे को केवल पानी से धोया जाता है। एक हफ्ते बाद गुरुजी ने शिष्य को लोटा साफ़ करने को कहा जिसकी चमक लगभग जा चुकी थी। शिष्य ने मिट्टी से साफ़ किया तो एक बार में वो चमक नहीं आई जो पहले आती थी तो फिर तीन से चार बार साफ़ करने पर पहले की तरह लोटा चमकने लगा।

इस शिष्य ने उत्सुकता के साथ गुरुदेव से पूछा तो गुरुजी ने बताया कि - “जिस तरह बार बार लोटे को साफ़ करने से चमक आई, उसी प्रकार निर्मल मन को व शरीर को निरंतर अद्यात्म झपी व्यवस्था से धोते रहने की जरूरत है।

ये वाकिया दर्शाता है कि किसी भी वरन्तु की चमक के लिए निरंतर अभ्यास ज़खरी है। भले ही वो जीवन ही क्यों न हो, नितरंतर रूप से अभ्यास ही जीवन को बेहतरीन व इरादों को मजबूती प्रदान कर सकता है।

आज जिंदगी एक ऐसी प्रस्तुति है जिसके माध्यम से हम हमेशा के लिए प्रेरणास्रोत बन सकते हैं।

12. आगे बढ़ने की ललक

जीवन में प्रत्येक व्यक्ति आगे बढ़ना चाहता है। सफलता के हर मुकाम वो हासिल करना चाहता है। यह व्यक्ति व उसके संरकारों पर निर्भर करता है कि उसे किस रास्ते से सफलता प्राप्त करनी है। ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में आगे बढ़ने के अनेक अवसर प्रदान करता है परन्तु ये मनुष्य पर निर्भर करता है कि वो उस अवसर को किस तरह से भुना सके। दुनिया में सफलता के मायने भले ही कुछ भी हों, परन्तु हर व्यक्ति को सफलता को प्राप्त करने का अपना एक अलग नजरिया है।

बहुत से लोग इस प्रवृत्ति के भी होते हैं कि सफलता की अभिलाषा में इतने दृष्टिविहीन हो जाते हैं कि सही और गलत का फैसला नहीं कर पाते हैं। ऐसा करना पाप है। सफलता निर्वार्थ भाव से मिली हुई ही श्रेष्ठ की श्रेणी में आती है और यही श्रेष्ठता ही भावी भविष्य को संवार सकती है व भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी हो सकती है। ये आगे बढ़ने की लालसा कई बार अपने अनमोल रिश्तों का गला घोंटने से भी नहीं कतराती है, फिर अपनों के साथ धोखा कर अर्जित की गई सफलता का कोई पैमाना नहीं होता। ये कुछ समय के लिए मिली खुशी के समान है जो हमें तो खुश कर देगी परन्तु हमारी आत्मा व हमारा जमीर हमें सदैव ऐसी सफलता के प्रति धिक्कारता रहता है।

एक सात्त्विक सोच ही आगे बढ़ने में सहयोगी है।

13. जीतने की चाहत

जीत की चाहत अपने आप में एक नशा है जिसके तहत व्यक्ति को केवल जीत ही जीत दिखाती है। उस विजय का स्वाद चखने के लिए वो किसी भी हद तक जा सकता है।

यूक्रेन में एक मोबाइल स्टोर ने ऑफर दिया कि जो लोग सबसे पहले अपने नाम को बदलकर अपना नाम ‘आईफोन सेवन’ रखेंगे। वैसे पहले पांच लोगों को ‘आईफोन सेवन’ प्री में दिया जायेगा। बस फिर क्या था हजारों की तादाद में नौजवानों ने अपना नाम बदल लिया। इनाम तो महज पांच लोगों को ही मिलना था और इसमें भी एक २० वर्षीय नौजवान ‘अलेक्जेंडर ट्रूरिन’ ने बाजी मारी। असल में यूक्रेन में आईफोन सेवन की कीमत तकरीबन ८५० युएसडी (अमेरिकन डॉलर) थी जो कि भारतीय मुद्रा के तकरीबन ६० हजार के बराबर है और वहाँ नाम बदलने का खर्च महज दो युएसडी (अमेरिकन डॉलर) है। तो काफी नौजवान तैयार हो गए ये महज एक उदाहरण है कि किस तरह युवाओं में जीतने की चाहत है। युवा को हर हाल में जीत चाहिए बेशक उसकी प्रतिष्ठा पर असर हो।

जीतने की चाहत एक नशे के रूप में हावी हो जाती है, जो कि ज्यादातर समय नुकसानदेह ही होती है, परन्तु जीत की चाहत ये तय नहीं करती कि आप जीत ही जाओगे। उसे लिए लगन मेहनत से कार्य करना ही एकमात्र विकल्प है।

सच्ची कहानी

मैंने पहली बार जब बन्दुक हाथ में ली थी। उसी दिन मुझे यह अहसास हो गया था कि मुझमें र्पेशल टेलेंट है। इसके बाद मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। हजारों मैडल मेरे कमरे की शोभा बढ़ा रहे थे। बीजिंग ओलंपिक से पहले तक फिर भी मुझे इसमें कुछ मिस लग रहा था। बीजिंग ओलंपिक के रवर्ण विजेता अभिनव बिंद्रा ये बता ही रहे थे कि एनडीटीवी के स्पोर्ट्स्‌एडीटर सोनाली चंद्रा ने उन्हें बीच में ही टोका। पूछा—‘तो क्या आज वह मैडल उस कमरे में

हैं?’ पूछने पर बिंद्रा ने कहा- ‘वह मैडल तो मेरी माँम की सेफ कर्सटडी में हैं।’ भारत के बीजिंग ओलंपिक में व्यक्तिगत स्वर्ण जीत इतिहास बनाने वाले अभिनव यंग फिक्रकी लेडीज आर्गेनाइजेशन द्वारा आयोजित समारोह में बोल रहे थे। समारोह में अभिनव ने अपने सफलता के राज भी खोले। उन्होंने कहा- ‘सकारात्मक सोच, मोटीवेशन और लक्ष्य के प्रति फोकस रहना ही मेरी सफलता का राज है।’

अभिनव कहते हैं सबसे पहले मेरे कोच कर्नल डिल्लन में मुझमें छिपे टेलेंट को परखा। मुझे सीखने की ललक के साथ जीत की चाहत भी बचपन से ही थी। मेरी सोच हमेशा ऊँची थी। वैरो भी शूटिंग मानसिक यातना देने वाला खेल है। बीजिंग ओलंपिक में फाइनल में तो मैं मशीन की तरह शूट कर रहा था। उस समय शूटिंग हॉल में लगभग सात हजार दर्शक थे। इनमें से ज्यादातर की यही चाहत थी कि कोई चीनी ही चैंपियन बने। मुझे पता था कि मेरी किरणत मेरी हाथ में हैं। वह दिन मेरा था। सब कुछ मेरे अनुकूल था। इससे पहले मैं ऑलंपिक रिकॉर्ड बनाने के बाद भी पदक नहीं जीत सका था। इसलिए मुझ पर ओलंपिक स्वर्ण जीतने को दश के साथ-साथ व्यक्तिगत दबाव भी था।

मैं यह सुन-सुन कर परेशान हो गया था कि देश में क्षमता तो है लेकिन मैडल विजेता नहीं हैं। जब समारोह यंग फिक्रकी लेडीज आर्गेनाइजेशन आयोजित कर रहा हो तो अभिनव से उनकी शादी, उनकी पसंद की लड़की आदि के बारे में भी सवाल पूछे जाने स्वाभाविक थे। उनकी पसंद जानने के लिए हर कोशिश की गई। काफी कुरेद-कुरेद कर पूछे जाने पर उन्होंने इतना ही कहा कि वह खेलों से प्यार करने वाली और खेलों को एंजॉय करनी वाली तो होनी ही चाहिए।

14. लक्ष्य की ओर अग्रसर

जीवन एक पहेली है जिसमें काफी जगहों पर निर्णायक मोड़ आते हैं। काफी लोग इन मोड़ पर पहेलियों में उलझ जाते हैं तो काफी अपनी बुद्धिमता का परिचय देते हुए बड़ी ही शालीनता से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहते हैं। निरंतर की गयी साधना किसी भी मनुष्य को अपने लक्ष्य पर ले जाकर छोड़ती है।

एक कुम्हार जब घड़े या मटकी को बनाना शुरू करता है तो वह एक कल्पना के आधार पर चोट करते हुए एक सुन्दर मटके का रूप देता है। वहीं एक चित्रकार जब कोई भी प्रतिलिपि तैयार करता है, तो उसके दिल और दिमाग में केवल एक काल्पनिक चित्र होता है जो उसकी कल्पना के अनुरूप चलता है और अंत में वही कल्पना एक वास्तविक चित्र का रूप ले लेती है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति के लिए जरूरी है कि अपने लक्ष्य के प्रति निरंतर कटिबद्धता के साथ आगे बढ़े।

उदाहरण स्वरूप राम और श्याम दो भाई थे। राम अपनी शिक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए दिन में रोज एक समय अपनी शिक्षा को देता था और वहीं श्याम परीक्षा से ठीक थोड़े दिन पहले पढ़ाई पर ध्यान देता था। हमेशा राम अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होता था। ये राम की सदैव अपने लक्ष्य की ओर निरंतर मेहनत का असर था, जो हमेशा राम को अव्वल रखती थी।

15. क्षमता का आंकलन

जीवन भले ही चुनौतियों का पुलिंदा है परन्तु यही जीवन एक व्यक्ति की क्षमता को बाहर लाने का एक जरिया भी है। मनुष्य क्षमताओं से सरोबार एक गमला है। उसकी मेहनत तय करती है कि उसे क्या फल मिले।

अंतरिक्ष में जाने वाली कल्पना चावला अगर सही समय पर अपनी क्षमताओं का नहीं पहचानती तो आज ये मुकाम उनके हाथ नहीं आता। वहीं लता मंगेशकर हो या मानसी जोशी (सारख्वत) (पेरा बैडमिंटन खिलाड़ी) इन्होंने अपनी ताकत को सही समय पर पहचाना और आज शिखरता इनके चरण चुम रही है। सही समय पर अपनी शक्ति का अहसास ही जीत तय करता है।

अपनी बहादुरी से सैंकड़ों यात्रियों की जान बचाने वाली नीरजा भनोट (सारख्वत) को भी अपनी बहादुरी का अंदाजा था पर हमें उनकी क्षमता का आंकलन ४ सितम्बर १९८६ को कराची (पाकिस्तान) में अगवा कर ले गए विमान से आंतकवादियों से भिड़ी व सैंकड़ों यात्रियों की जान बचाकर खुद शहीद हुई, उस दिन हमें अहसास हुआ।

इंसान के अंदर अपार क्षमता है। जब सारे रास्ते बंद हो जाते हैं तब ईश्वर कुछ रास्ते खोलता है, जिन रास्तों पर अपनी क्षमता का उपयोग कर इंसान सफलता की राह बना सकता है।

16. असफलता का डर

जिंदगी में विफलता की शुरूआत भी उसी दिन से शुरू हो जाती है जिस दिन किसी व्यक्ति का सफलता के प्रति ध्यान भटकाकार असफलता की ओर आकर्षित होना शुरू हो जाता है। अपने लक्ष्य से अलग चलकर असफलता की कल्पना करना व उसके परिणामों को व उनके असर पर अपना ध्यान कंद्रित करना नुकसानदेह है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सफलता चाहता है इसलिए उसकी कोशिशें जारी रहती हैं। जिस तरह एक चींटी चट्टान पर चढ़ती है, सौ बार फिसलती है पर अपनी कोशिशें जारी रखती है और एक समय ऐसा आता है जब वो चींटी चट्टान को पार कर लेती हैं। चींटी को भी असफलता का डर होता है पर उसे अपनी मेहनत व कोशिश पर भी भरोसा होता है और उस भरोसे के बल पर वह मुश्किलों का सामना करते हुए विजयी होती है।

यही दुनिया का दस्तूर है, जीता वही है....जो हारा नहीं और हारा वही है....जो चला नहीं....इसलिए निरंतर प्रयास व लक्ष्य प्राप्ति के लिए आगे बढ़ते रहना है। असफलता के प्रति चिंता ही सफलता की रुकावट है और इस डर को दूर रखकर ही जीता जा सकता है।

“लहरों से डरकर नौका पर नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।”

17. जीवन के घटक

‘उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहाँ जो सोवत है,
जो सोवत है वो खोवत है, जो जागत है वही पावत है’

आज का समयचक्र कुछ ऐसा ही है। संघर्ष भरे इस जीवन में व्यक्ति द्वारा किसी भी कार्य के प्रति सक्रियता ही सफलता व असफलता को तय करती है। ऊपर दी गई पंक्तियों में ‘मुसाफिर’ शब्द आज के जीवनयात्रा में व्यक्ति से सम्बंधित है। पंक्तियों के माध्यम से व्यक्ति को जागृत करने का प्रयास किया गया है। जो सपने संजोये हैं उन सपनों के प्रति कार्य करने को प्रेरित किया जा रहा है।

जीवन में व्यक्ति को भौतिक, आध्यात्मिक व बौद्धिक जीवन जीने की प्रेरण दी जाती है। ये तीनों घटक एक साधारण से व्यक्ति को भी महापुरुष बना देते हैं। कोई भी व्यक्ति अगर इन तीनों घटकों को परिपूर्ण है तो फिर उसका जीवन सफल हो गया। आज के भौतिक जीवन में अध्यात्म व भौतिकता को जिंदा रखना भी एक चुनौती है। जिसके फलस्वरूप जीवन में ऐसे भी पल आते हैं जहाँ इन घटकों के खंडित होने की संभावना ज्यादा रहती है।

जीवनकाल के इन घटकों पर विजय प्राप्त कर लेना ही पुरुषार्थ का रास्ता है, जो सीधे अलौकिक जीवन को सार्थक करने में सहयोगी होता है।

18. जीवन एक तुलना

हमारे जीवन में पल-पल पर तुलना है। यह में बनाती भी है और बिगड़ भी करती है। जब हम समझदारी या बुद्धिमानी के साथ तुलना करते हैं तो यह हमें आगे बढ़ने को प्रेरित करती है। वहीं हम जलन और ईर्ष्या से तुलना करने लगते हैं तो खुद का नुकसान करते हैं। हमें रचनात्मक तुलना सीखनी चाहिए। अक्सर लोग अपनी क्षमता को तलाश नहीं पाते हैं।

जब कभी व्यक्ति अपनी तुलना दूसरों से करता है तब उसकी गुणवत्ता पूरी तरह से प्रभावित होती है। जिस पल से आप दूसरे से तुलना शुरू करते हैं। उसी पल से आपको खुद के झाँकने की ऊर्जा नष्ट होनी शर्क हो जाती है।

इस बात से कोई आश्चर्य नहीं है कि दूसरों के साथ तुलना हमारा तनाव बढ़ाती है और ये एक मानसिक बीमारी का भी रूप ले सकती है। हमें बचपन से ही तुलना करना सिखाया गया है। माता पिता अपने बच्चों की तुलना दूसरे बच्चों से करते हैं। फिर बाँस हमारी तुलना अपने दूसरे कर्मचारियों से करता है इन बस बातों से महज एक बेचैनी पैदा होती है।

एक कहानी याद आती है। एक बार एक जंगल में कुछ अनपढ़ लोगों के समूह को हीरे जवाहरात् से भरा बक्सा मिल गया। समूह के लोगों ने खूब प्रयास किया पर वो बक्से को नहीं खोल सके और थक हारकर अनपढ़ लोगों के समूह ने उस बक्से को वहीं छोड़कर चले गए। थोड़ी देर बाद वहां एक पढ़ा लिखा चतुर आदमी आया उसने बक्से को देखा और दिमाग लगाकर बक्से को खोल लिया और कीमती सामान लेकर घर चला गया।

ये कहानी हमारे पर भी फिट बैठती है। हमारी योग्यता व उपलब्धियां भी किसी बक्से में बंद हैं, जिसे अगर अनपढ़ लोगों के समूह के हाथ लग गया तो वो खोल भी नहीं पायेंगे और नुकसान भी देंगे वहीं अगर कोई समझदार व्यक्ति हमारी योग्यता से परिचित होता है तो हमारे व्यक्तित्व को कोई निखार देगा बस ये निर्भर करता है कि आपका समाना किससे होता है। एक योग्यवान व्यक्ति ही आपकी योग्यता को पहचान सकता है जिसके

फलस्वरूप आपके पारिवारिक जीवन सामाजिक जीवन व व्यक्तिगत जीवन को प्रेरक बनाया जा सकता है।

माना कि जीवन तुलनात्मक है परन्तु उसी तुलना में अच्छे को आधार बनाकर आगे बढ़ने की जरूरत है ताकि लोग आपके जीवन व आपकी जीवनशैली से प्रेरणा ले सके।

19. स्पर्धात्मक पल

अपार संभावनाओं वाले इस जीवन में काफी बार ऐसा होता है जब कहीं न कहीं व्यवसायिक, सामाजिक या व्यक्तिगत जीवन में स्पर्धात्मक पल आते हैं, जहाँ आज का समय सम्पूर्ण दिखावे का समय है जहाँ व्यक्तिगत रूप से जीवनशैली में महँगे शौक पालकर गाड़ी, घोड़े, बंगले व उच्च स्तरीय रहन सहन आम जीवन का हिस्सा बन गया है। व्यक्तिगत जीवन में भी हर त्यौहार व किसी भी प्रकार के मौके कोई चूकना नहीं चाहता। स्पर्धा को बरकरार रखा जाता है। वहीं सामाजिक जीवन में ये पहलु कुछ ज्यादा ही प्रभाव छोड़ता है। शादी समारोहों से लेकर हर उस सामाजिक व सार्वजनिक कार्यों में आर्थिक रूप से प्रदर्शन किया जाता है।

सांस्कृतिक आयोजनों में आर्थिक बल प्रयोग का प्रदर्शन किया जाता है वहीं व्यवसायिक स्थितियाँ और ज्यादा भयावह हैं। जब स्पर्धा में ही व्यक्ति अपना कम्ज़ी कभार वह कुछ खो बैठता है। किसी टेंडर या कॉन्ट्रैक्ट को हासिल करने के लिए किसी प्रतिद्वंद्वी से स्पर्धा करना व नुकसान हासिल करना भी दुखद पहलु है।

इंसान को चाहिए कि सादगी से जीवन जिए व खासतौर पर ऐसे स्पर्धात्मक पहलुओं से बचना चाहिए।

कहानी:-

एक शहर में दो भाई रहते थे। व्यापार साथ ही करते थे। एक समय ऐसा आया दोनों के व्यापार अलग-अलग करना पड़ा। बड़ा भाई काफी गंभीर व लम्बी सोच रखने वाला था। छोटा भाई थोड़ा चंचल था। परिवार के बड़ों ने रनेह रखते हुए छोटे को हिस्से में ज्यादा अमानत रखवाई।

थोड़े समय बाद जब दोनों अलग अलग कारोबार करने लगे तो छोटे भाई की

आकरिमिक मृत्यु हो गयी ओर उसका व्यापार उसके बेटे संभालने लगे। बड़े भाई की अपने छोटे भाई के बेटों के प्रति संवेदना थी परन्तु जब भी कहीं व्यापारिक आमना सामना होता था तो एह तय मूल्य का कोटेशन किसी भी टेंडर के लिए भरा जाता था। परन्तु छोटे भाई के बेटे हमेशा अपने ताऊजी से हीं ज्यादा टेंडर रकम भरते थे। काफी बार ताऊजी ने समझाने का प्रयास किया पर उन्हें लगा कि ताऊजी उनकी सफलता से जलते हैं।

परिणाम ये हुआ कि टेंडर जब पूर्ण हुए तो बहुत ज्यादा व्यापारिक नुकसान छोटे भाई के लड़कों को हुआ। सारी सम्पति नीलाम हो गयही। छोटे भाई के लड़के ओर पूरा परिवार सड़क पर आ गए। बड़े भाई को जब इस बात का पता चला तो काफी दुख हुआ और उसने अपना हृदय बड़ा करते हुए अपने छोटे भाई के लड़कों को अपने घर व व्यापार में जगह दी।

सारांश-स्पर्धा होना चाहिए पर स्वरथ होनी चाहिए, अनियंत्रित स्पर्धा भी नुकसान देती है।

20. सीखने की ललक

कहानी:-

एक नौकरानी अपने मालिक के घर कार्य करने के लिए जाती थी। साथ में अपने चार वर्ष के बच्चों को साथ ले जाती थी। वह नौकरानी घर का कार्य करती थी। तब बच्चा चुपचाप बैठा रहता था। उसी दौरान वह मालिक के बच्चों को पढ़ाने एक निजी शिक्षक ट्यूशन देने के लिए घर पर आता था। वो जब सेठजी के बच्चों को पढ़ाता था तो नौकरानी का बच्चा दूर से उन बच्चों को पढ़ते हुए देखता था। जैसे-जैसे समय निकला वर्ष पूरा हआ। नौकरानी का बेटा भी काफी कुछ सीख गया था।

एक दिन नौकरानी के बेटे को इस तरह से पढ़ाई पर नजर रखते हुए सेठजी ने देख लिया। बच्चे को पास बुलाया और अपने बेटे को पुस्तक से कुछ सवाल कियो और सुनकर आश्चर्यचकित हो गए। सारे सवालों के जवाब नौकरानी के बच्चे ने सही दिए थे। सेठ व सेठानी दोनों बहुत दयालु थे। उन्होंने अपने बेटों के साथ नौकरानी के बेटे का भी उसी स्कूल में ढायिला दिलवा दिया। समय निकलते देर नहीं लगी और आगे जाकर वही नौकरानी का लड़का उच्च शिक्षा प्राप्त कर एक सफल व्यक्ति बना।

आज के दौर में वही व्यक्ति सफल है जिसमें कुछ सीखने की ललक है, जो कुछ करना चाहता है। दुनिया जीतना चाहता है, आगे बढ़ने के लिए किसी भी कार्य को करने की महत्वकांक्षा जरूरी है।

21. माहौल का असर

कहानी:-

एक संयुक्त परिवार के व्यावसायिक घराने ने अपनी शेयर मार्किट से जुड़ी कंपनी के लिए एक अफसर को नियुक्त किया, जिसकी मासिक पगार लगभग दो लाख रुपये थी। उस अफसर ने कम स्यम में ही कंपनी को शिखरता पर ले जाने की ओर अग्रसर हो गया। तीन साल के थोड़े से अंतराल में कंपनी को लगभग १०० करोड़ से ज्यादा का फायदा उस अफसर ने अपनी बुद्धि व कौशल के आधार पर करवाया।

पांच भाइयों के कॉन्सर्ट हाउस को वो मैनेजर रास आ गया और उन्होंने अब दोपहर व शाम को खाना खाने के लिए हमेशा के लिए अपने साथ एक भाई की तरह खाने का न्योता दे दिया और उसे अपना छठा भाई समझकर उसकी व उसके परिवार की बहुत सारी सुख सुविधाएं बढ़ा दी। अब पांच भाइयों के साथ वो अफसर भी रोज खाना खाने लगा। एक दो महीने सिलसिला चलता रहा। दो महीने के बाद खाने की टेबल से एक भाई गायब रहने लगे, तो बड़े भाई ने झल्लाकरण सबसे पूछा तो पता चला कि अफसर ने सबके बीच कम्पनी से जुड़े निर्णयों को लेकर दीवर खड़ी कर दी है।

इस पर उस अफसर को अब छोड़ भी नहीं सकते थे क्योंकि वो कंपनी को अच्छा मुनाफा दे रहा था। इस पर बड़े भाई ने एक जासूसी एजेंसी को नियुक्त किया और अफसर की जानकारी जुटाने का कार्य सौंप दिया।

ठीक एक महीने बाद पांचों भाइयों के साथ जासूस कंपनी के लोग बैठ गए और पिछले एक महीने में जितनी जानकारी जुटाई थी उसको सारांश रूप से सबके आगे रखना शुरू किया। उन्होंने बताया कि इस अफसर और इसके बड़े भाई के बीच उम्र का करीबन २० साल का फासला है। जब इस अफसर की माँ और पिता जी की शादी हुई उसके कुछ वर्षों बाद इसका बड़ा भाई पैदा हुआ पर संजोग से इसके माता पिता इस बच्चे को जन्म नहीं देना चाहते

थे और इस बात को लेकर पति पत्नी में अनबन हो गयी और इसकी माँ अपने मायके चली गयी।

१८ वर्ष बाद वापिस माँ-पिताजी में सुलह हुई और पिता इसकी माँ को मनाकर वापिस अपने घर ले आया। फिर दो वर्ष बाद ये अफसर पैदा हुआ। जिससे दोनों भाइयों के बीच में करीबन २० साल का फर्क आ गया। अब जब छोटा भाई बच्चा था तो बड़ा भाई पिता की उम्र का हो चला था और पिता दादा की उम्र समान दिखने लगा। छोटा भाई हमेशा अपने बड़े भाई के प्रति असहज महसूस करने लगा।

बचपन में यातना सहन की गई। जब पढ़ लिखकर बड़ा हुआ तो हर परीक्षा व प्रतियोगिता में प्रथम आया पर नौकरी लगने में थोड़ा समय लग गया। उस दौरान उसे अपने पिता जी पुश्टैनी किराना की दुकान में अपने बड़े भाई के साथ बैठना पड़ा और अपने बड़े भाई के द्वारा उचित व्यवहार ना पाकर छोटा भाई काफी दुखी हुआ।

भ्रातृत्व के भाव की कमी को छोटे भाई ने महसूस किया। उसके बाद आपके यहाँ काम लगने के तीन वर्ष तक मामला सामान्य था। पर जब आपने इसे अपना भाई मानकर घर पर खाना खाने के लिए बुलाना शुरू किया तो इसने देखा कि सभी भाई एक साथ बैठकर एक ही स्थान पर खाना खा रहे हैं जो कि इससे बर्दाशत नहीं हुआ। क्योंकि ये हमेशा से इस प्रकार के रनेह से वंचित रहा हुआ था तो इसके मन में पीड़ा थी कि भाई-भाई कैसे साथ रह सकते हैं। प्यार से खाना खा सकते हैं, तो आप सभी भाइयों को अलग करके अपनी तृष्णा को शांत करने के लिए इसने ऐसा किया जिससे आपकी आपस में फूट पड़े।

तब सभी भाइयों ने मिलकर इसकी छुट्टी कर दी।

सारांश:-

भले ही व्यक्ति किसी भी मुकाम पर पहुँच जाये पर उसके शुरुआती जीवन में जिस माहौल में उसका भरण पोषण हुआ है उसका असर तो रहेगा ही। बचपन में बिताये पलों को पूरी जिंदगी भर असर रहना लाजमी है। बचपन की घटनायें पूरे जीवन में होने वाली

गतिविधियों पर भी अपना प्रभाव छोड़ती हैं। व्यक्ति किस माहौल में रहा हुआ है। उसका असर उसके जीवन भर आड़े आएगा। इसलिए कभी भी छोटे बच्चे को उसके बचपन में ना ही अधिक प्रताड़ित करना चाहिए और ना ही अथाह रन्जेह देना चाहिए।

अति हर चीज़ की बुरी है, हर हाल व माहौल में ढल सके ऐसी व्यवस्था बनाकर रखना चाहिए। किसी भी व्यक्ति के जीवन में जब बचपन मायने रखता है तो फिर हमें उसकी सरंचना में भली भाँति तरीके से ध्यान रखना चाहिए। बच्चे को अत्यधिक डराना भी कमजारे करने के समान है। इसलिए बच्चे के बचपन में उसके पालन पोषण में विशेष ध्यान देना चाहिए। बचपन में रींचा गया पौधा आगे जाकर अच्छे पल दे, ऐसा लालन पालन करना चाहिए।

बचपन के समय रही कमी व अत्यधिक मिली सुविधा व्यक्ति के पूरे जीवन पर असर डालती है तो माता पिता व परिवार के सदस्यों को चाहिए कि सहज तरीके से पालन पोषण हो जिनमें संस्कार, रन्जेह, त्याग व बलिदान का पूरा मिश्रण हो।

22. मित्रों की भूमिका

कहानी:-

एक गाँव में श्याम और मोहन दो पक्के दोस्त थे। दोनों ने शिक्षा साथ ग्रहण की। बचपन साथ बिताया। हर सुख दुःख में साथ रहते थे। परन्तु दोनों के करीबी दोस्त अलग-अलग क्षेत्र से थे। श्याम के दोस्त पढ़ाकू व व्यावहारिक थे। वहीं मोहन के दोस्त थोड़े आलसी किस्म के थे। शिक्षा पूरी होने के बाद श्याम अपने दोस्तों के साथ शहर चला गया। उसने मोहन को भी साथ आने को कहा पर मोहन के दोस्तों ने मोहन को रोक लिया। श्याम शहर में दोस्तों के संग मेहनत व लगन से कार्य करने लग गया और धीरे-धीरे अपने कार्य में दक्षता हासिल कर आर्थिक रूप से सुदृढ़ हो गया।

वहीं मोहन के दोस्त पूरे दिन गाँव में ताश खेलते व आलस में सोये रहते। अंजाम ये हुआ कि मोहन की स्थिति बद से बदूतर हो गई। घर में खाने के लाले पड़ने लग गए। ये बात जब श्याम को पता चली तो गाँव आकर मोहन को अपने साथ शहर ले गया और अपने साथ काम में लगा लिया। थोड़े दिन में मोहन भी मेहनत से कार्य करने लगा और उसकी दयनीय स्थिति भी अब सामान्य होने लगी।

सारांश:-

जीवन की सुगमता में भी मित्रों का एक अहम् योगदान रहता है। बेशक हमारे मित्रों का चुनाव शानदार हो। आज के दायरे में मित्र केवल शिक्षा व बचपन व्यतीत करने तक ही सीमित नहीं है। मित्रों का दैनिक जीवन में अहम् फैसलों को लेकर मुख्य योगदान रहता है। सच्चे मित्र जीवन के हर पड़ाव में सहभागी होते हैं।

बस तय ये करता है कि हमारा मित्रों के प्रति चुनाव कैसा है। अगर हमने हमारे मित्रों के प्रति चयन में थोड़ी भी लापरवाही बरती, तो ये चुनाव हमें जिंदगी भर तकलीफ दे सकता है।

इसलिए मित्रों का चयन प्रक्रिया में हमेशा अचार-विचार व संरक्षण का संतुलन होना जरूरी है।

हमारा जीवन बेहद ही नाजुक होता है। भावना के नजरिये से हम बहुत जल्दी प्रभावित हो जाते हैं। उस स्थिति में हमें सदैव मित्रों की सुची हर प्रकार से शानदार रखनी चाहिए, क्योंकि उनके साथ बिताये पलों का हमारे जीवन पर बेहद असर पड़ता है, जिसके फलस्वरूप हमारे व्यवहार में भी निरंतर बदलाव आता है।

इसलिए मित्रों की चयन प्रणाली जो कि हमारे जीवन की मुख्य भूमिका रखती है। बेहद ही सटीक व सुव्यवस्थिति हो, इस बात का ख्याल रखना जरूरी है।

23. चुनौतियों से सामना

जीवन वैसे तो चुनौतियों का घरेंदा है परं फिर भी इंसान अपने आत्मविश्वास के बल पर हर चुनौती से निपटने का माद्दा रखता है। जीवन के हर पहलु पर छोटी-छोटी समस्याएं आती हैं। जैसे शैक्षणिक अवरथा में शिक्षा से संबंधित चुनौतियां परीक्षा में स्पर्धाओं से लड़ने व अव्वल रथान पाने की होड़ के बावजूद सफलता अर्जित करने की ठानकर चलता है कि शिक्षा पूर्ण करने के बाद व्यक्ति के पास नौकरी व्यवसाय पारिवारिक जीवन में ढेरों चुनौतियों से सामना होता है। उस स्थिति में प्रत्येक हालातों का डटकर मुकाबला ही व्यक्ति की जीत तय करता है।

किसी भी व्यक्ति का आत्मविश्वास व कार्य के प्रति अथाह मेहनत ही हर प्रकार की समस्याओं से लड़ने का एकमात्र हथियार है, जिसके सहारे जीत तय की जा सकती है। व्यावसायिक चुनौतियाँ भी अपने पाँव पसारती हैं।

व्यक्ति अपनी कार्यकुशलता के आधार पर कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेता है। जीवन पर्यन्त समस्याएं रास्ते का रोड़ा बनने का प्रयास करती है, परन्तु इंसान की लगन व मेहनत स्थिरता के आधार पर किसी भी प्रकार की चुनौती से लड़ने का विश्वास पैदा करती है व आगे बढ़ने की ओर प्रेरित करती है जो कि व्यक्ति के जीवन में समय समय पर अनुभव के आधार पर काम आती है।

24. सपनों की पराकाष्ठा

किसी भी कार्य की सफलता को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को उसके प्रति सपने संजोने का पूरा अधिकार है। उन सपनों के आधार पर ही व्यक्ति आगे बढ़ने की ओर प्रेरित होता है। परन्तु जीवन में मोड़ जब आता है तब व्यक्ति द्वारा संजोये गए सपनों की पराकाष्ठा शुरू होती है। यहाँ सपनों की पराकाष्ठा से मतलब सीधे सीधे सपनों को प्राप्त करने के रास्ते में आने वाली कठिनाइयों से है।

सपनों को प्राप्त करने के लिए गुजरने वाली परीक्षा की घड़ियों से है। सपने संजोना कोई बुरी बात नहीं है। सपनों को साकार करने के लिए की जा रही मेहनत प निर्भर करता है कि आप अपने सपनों को किस तरह से पूरा करना चाहते हो? एक व्यक्ति अपने जीवन के हर घटक में सपने संजोता है, जिसके लिए पूरे जीवन मेहनत करता है।

कुछ सपने सच होते हैं। कुछ काल्पनिक होने के आधार पर पूरे नहीं हो पाते, परन्तु व्यक्ति के प्रयास कभी कम नहीं होते। वो हमेशा अपने सपनों को सच करने के लिए प्रयास करता है। कुछ सपने सच होते हैं तो कुछ सपने सपने ही रह जाते हैं। यही मानव जीवन है, जिसमें आशा व विश्वास के सहारे इंसान अपनी खुशी ढूँढ़ता है।

25. रनेह का समावेश

कहानी:-

एक सरकारी स्कूल में एक नए शिक्षक का तबादला होता है। शुरू-शुरू में सभी बच्चों से मिलना जुलना होता है। थोड़े दिन बाद सभी बच्चों से शिक्षक का परस्पर रनेह हो जाता है। शिक्षक की शिक्षा उपलब्ध करवाने की प्रणाली से सभी बच्चे प्रभावित हो जाते हैं और स्कूल का परीक्षा परिणाम भी इसी बूते शानदार आना शुरू हो जाता है।

जब कुछ समय बाद शिक्षक का दूसरी जगह तबादला होने का समाचार आता है तब सारे विद्यार्थी भावुक हो जाते हैं और रोने लग जाते हैं। उनका एक शिक्षक के प्रति ये भाव देखकर गाँव के लोग भी प्रभावित होते हैं। यह एक रनेह का समावेश विद्यार्थी वर्गों में शिक्षकों द्वारा दिया जाता है।

आज जीवन भी इसी पड़ाव पर है। हमारे सुख व दुःख का आधार भी हमारा किसी के प्रति रनहे के समावेश से ही है। जिंदगी के हर पल में हमारी खुशी व हमारे गम में हमारा किसी न किसी के प्रति रनहे का समावेश ही है। रनेह के उच्चतम आधार के मायने से ही सुख व दुःख का पैमाना बढ़ता है जो हमारे जीवन के उत्तरोत्तर घटकों के आधार तय करता है।

26. रिश्तों की बारीकी

जिंदगी को बेहतरीन व सुखद बनाने में सबसे ज्यादा सहयोगी होते हैं हमारे जीवन के कुछ रिश्ते वो रिश्ते माता-पिता, भाई-बहन, दोस्त या सहपाठी के रूप में हो सकते हैं। हमारे जीवन को बेहतरीन बनाने के लिए हमें हर रिश्ते की संवेदनशीलता को समझना होगा। हर रिश्ते की बारीकी को समझते हुए प्रत्येक की भावना का सम्मान करना होगा। हमारे आसपास हम काफी जिंदगियों को खुशहाल नजर में देखते हैं तो काफी जीवन में वीरान पड़ाव में भी देखने को मिलते हैं। उस स्थिति में आपसी रिश्तों को समझ पाना या न समझ पाना भी एक कारण है।

आपसी रिश्तों की संजीदगी का ख्याल हमें कदम-कदम पर रखना होता है। संयम की परीक्षा व सूझबूझ की पराकष्टा रिश्तों के हर मोड़ पर देखने को मिलती है। जहाँ रिश्तों की बारीकी को नहीं समझ पाते वहाँ परिवार विच्छेद के वाकिये भी अमूमन देखने को मिलते हैं पति पत्नी के झगड़े से तलाक तक का सफर व पिता पुत्र तथा भाई-भाई के बीच सम्पति विवाद के झगड़े के बाद परिवार विच्छेद के वाकिये केवल रिश्तों की बारीकियों को ना समझ पाने के ही घटक हैं।

अपनी आर्थिक फलीभूतता को शांत करने के लिए कुछ लोग धोखा देने में भी रिश्तों को तार-तार करने से नहीं चूकते हैं तो उस स्थिति में भी वो रिश्तों की बारीकी से पूरी तरह से अनभियोग होते हैं और आर्थिक व्यवस्था को प्राथमिकता देते हुए सालों से संजोये रिश्तों को ताक पर रख देते हैं।

कहानी:-

रिश्ते में दो भाई थे। एक की आर्थिक स्थिति सही नहीं थी और एक भाई आर्थिक रूप से ठीक था। आर्थिक रूप से मजबूत भाई ने अपने चचेरे भाई जो कि आर्थिक रूप से

सामान्य नहीं था, को अपने पास व्यवसाय में नौकरी पर रख लिया, ताकि उसकी कमियों को पूरा कर सके और घर की सारी सुख सुविधाओं से परिपूर्ण कर दिया। गाँव में जो स्थिति सही नहीं थी, उसे भी पक्का मकान व आपसी रिश्तेदारों के बीच मान सम्मान में वृद्धि करने में मदद की। बड़ा भाई जो आर्थिक रूप से ठीक था।

अपने चरेरे भाई की हर संभव मदद करने के लिए तत्पर रहता था। शायद ही कोई परेशानी को आने देता था। जो आर्थिक रूप से हटाई जा सकती हो। बड़े भाई ने छोटे चरेरे भाई को कभी सगे भाई से कम नहीं समझा व रिश्ते की हर बारीकी को समझा, परन्तु छोटे भाई की सारी सामान्य जरूरतें पूरी हो चुकी थीं व वो अब व्यवसाय में भी पारंगत हो चुका था।

उसने उस रिश्तों व उन रिश्तों की बारीकी को एक झाटके में तोड़ते हुए अपने बड़े भाई के प्रतिद्वंद्वियों के साथ मिलकर अपने बड़े भाई के समाने स्पर्धा में व्यवसाय शुरू कर दिया व हर कोशिश रहती कि अपने बड़े भाई को नुकसान पहुँचे। बड़े भाई के साथ व्यवसाय करने वाले तमाम लोगों को जैसे तैसे अपने साथ ले लिया व आर्थिक सामाजिक व व्यावसायिक रूप से अपने बड़े भाई को तोड़ने में लग गया। पर होनी को कुछ और मंजूर था और कुछ फैसलों ने उस छोटे भाई को कुछ दिनों के लिए भले ही फर्श से अर्श तक पहुँचाया पर अपने बिना मूल्यांकन के फैसलों से आर्थिक नुकसान ने छोटे भाई को वापिस वहीं ले जाकर खड़ा कर दिया जहाँ से उसने शुरुआत की थी।

इस बार उसके साथ केवल असफलता ही नहीं थी बल्कि बाजार का कर्जा व अब दोबारा ना उठ पाने का मानस भी था पर अब छोटे भाई ने आर्थिक नुकसान के साथ-साथ अपने बड़े भाई के विश्वास को भी खो दिया था। यहाँ इस कहानी से केवल रिश्तों की बारीकी से आपको अवगत करवाने का प्रयास किया है।

ये कहानी पूर्णतया काल्पनिक है। किसी भी सत्य कथा पर आधारित नहीं है।

27. अपनेपन का अहसास

वैष्णव जन तो ऐ ने कहिये रे जे...
पीर पराई जानें रे....

सदाचारी पुरुष तो वही होता है जो अपनों की पीड़ा को समझ सकता है। भावनाओं के काफी सैलाब शब्दों से बयां नहीं होते हैं। उनको अपनों द्वारा महसूस किया जाता है तथा उसे अपनेपन का अहसास करवाया जाता है कि सदैव हम अपने साथ है समय चक्र भी इस बात का साक्षी है कि समय कभी भी किसी का एक जैसा नहीं रहा है। शायरों और पुराणों की बात के अलावा हमने भी हमारे जीवनकाल में वाकिए देखे होंगे। जब तीस चालीस वर्ष पूर्व जिन नामों के चर्चे थे आज वो गुमनामी में कहीं खो गए हैं। ये इस बात की गवाही दे रहे हैं कि समय चक्र अपनी दिशा बदलता है।

दिन में सूरज की धूप छाँव भी अपनी जगह बदलती है। वहीं बंद घड़ी भी दिन में दो बार सही समय बताती है। बस फर्क है अहसासों का रिश्तों व अपनेपन का अहसास व जीवन के मधुर व खट्टे सम्बन्धों का अहसास प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के पड़ाव में होता रहता है यही जीवन व रिश्तों की सुंदरता है यही जीवन के अहसासों का समायोजन है।

28. स्वाभिमान का पक्षधर

जिंदगी का मौलिक उद्देश्य ही यही है कि वो सच व सच के परिपेक्ष्य के साथ रहे जीवन असमानताओं का संतुलन है।

“पचेगा तो बचेगा...
स्वाभिमान हो या धन”

अर्थात् आज का समय हर परिस्थिति में मजबूत रहकर रहकर खड़े रहना है आज की स्थिति यही है कि आप अपने अंदर कितना समेट सकते हो, आप अपने अंदर कितना पचा सकते हो, फिर भले ही वो आपका स्वाभिमान हो या फिर आपके द्वारा अर्जित किया हुआ धन हो। अगर आप पचा गए तो आपके जीवन को सुखद बनाने से कोई रोक नहीं सकता।

वहीं दूसरी तरफ आपकी लापरवाही रही और आप पचा नहीं पाए तो आपको भयंकर मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। आपको आर्थिक नुकसान तो होगा ही साथ-साथ आपके स्वाभिमान को भी ठेस पहुंचेगी जिससे वापिस एक नई यात्रा को शुरू करना आपके लिए बहुत बड़ी चुनौती हो सकता है। ये जीवन स्वाभिमान का ही पक्षधर है जिसके सहारे ही आप एक सुखद व कुशल जीवन जीने की कल्पना कर सकते हैं। बगैर स्वाभिमान के जीवन गर्त बनते देर नहीं लगती जिसका सामना करना कठिन है।

29. लक्ष्यप्राप्ति की हौड़

“उड़ने दो मिट्टी को आखिर कहाँ तक उड़ेगी...
हवाओं ने जब साथ छोड़ा तो जर्मी पर ही गिरेगी”

आज स्थितियां ऐसी ही हैं लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्वरथ प्रतिरप्थक का दौर खत्म सा हो गया है। कुछ लोग लक्ष्य प्राप्ति के लिए अपने मर्यादित संसाधनों को ताक पर लगा देते हैं और फिर उन संसाधनों के बलबूते अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया जाता है।

भले ही वो आर्थिक प्रदर्शन हो या मौलिक प्रदर्शन और फिर जैसे ही उन संसाधनों में कमी आती है वैसे ही वो अर्थ से फर्श पर आ जाते हैं और अपने सामान्य जीवन से भी हाथ धो बैठते हैं ये हालात बदलने चाहिए। मन कि स्पर्धा हो पर वो स्पर्धा स्वरथ हो, गतिशील हो, व्यवस्थित हो, किसी भी सफलता को प्राप्त करने के लिए लक्ष्य को साधना आवश्यक है पर उस लक्ष्य की प्राप्ति को हासिल करने की महत्वकांक्षा की कीमत हमारे जीवन व मनोबल को असर करे ऐसी होड़ में शामिल होने का कोई औचित्य नहीं है।

हमारे भाव व हमारे प्रयास किसी नए आशावादी व्यक्ति के लिए प्रेरणा बने ऐसी कोशिश हमारी रहनी चाहिए ना कि आगामी पीढ़ी के प्रति हम रास्ते का रोड़ा बने व अवरोध का कारण बने।

30. स्वार्थ की बूटी

जीवन में कुछ हद तक स्वार्थ अनिवार्य है पर स्वार्थ की गहराई इंसानियत के महत्व को ख़त्म सी कर देती हैं...

आज के युवा की कहानी आज का युवा स्वार्थ का पुतला है वो केवल दिन रात अपने बारे में सोचने के अलावा कोई कार्य नहीं कर सकता। उसे परीक्षा में कैसे भी करके अच्छे अंक आ जाये। स्कूल कॉलेज या ट्र्यूशन क्लास में अच्छे लड़के लड़की से मित्रता हो जाये, अच्छा मोबाइल मिल जाये, अच्छी कार मिल जाये, बसुदनिया भर की चीज मिल जाये, परन्तु किसी के लिए कुछ ना करूँ, ना ही किसी को कुछ दूँ, ना ही राष्ट्र या धर्म के लिए कुछ करूँ, ना ही संस्कृति से कुछ लेना देना है, ना ही सभ्यता से कोई लेना देना है। ना ही संस्कार की उलझन में पड़े और ना ही बकवास बातों के लिए मेरे पास समय है। ऐसी सोच पसर रही है।

आज का युवा बॉलीवुड की भांड संस्कृति का गुलाम सा बन गया है। बुरा काम करने में किसी प्रकार का संकोच ना करने वाली व कम्युनिस्ट माहौल की पढ़ाई पढ़कर अंग्रेजों की गुलाती करने वाली नस्ल सी हो गयी है। आज ही युवा पीढ़ी जिसके पास ध्यान धन हो उसे ही पन्ना अपना आदर्श मानना, भले ही वो पैसा अनीति से कमाया हो, पैसा कामना व विलासिता में खर्च करना, ये ही आज के ज्यादातर युवा अंतिम लक्ष्य है जीवन की सार्थकता के लिए ऐसी चीजों से दूर रहना होगा।

31. निःखार्थता के भाव

जीवन में मानवीय जीवन व्यवहार का महत्वपूर्ण कर्म हम सभी का एक दूसरे के प्रति प्रेम, प्रसन्नता, दया, करुणा और निःखार्थता के भाव रखना है।

कहते हैं...प्रेम एक ऐसा संवेग है जो अंतत इस संसार में कई दुखों का एक कारण है फिर चाहे वो किसी भी रिश्ते का हो माता-पिता, भाई-बहन, दोस्त या फिर जीवनसाथी परंतु प्रेम के साथ एक भाव निःखार्थता का होना अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि इस भाव के अभाव में किया गया प्रेम और उससे संबंधित कार्य व्यवहार और आचरण की अक्सर प्रेम में मिले दुःख का वास्तविक कारण है। ऐसे आचरण से व्यक्ति हमेशा उम्मीदों और प्रत्याशाओं से घिरा रहता है। जिनके पूर्ण न होने पर उसे कष्ट होता है।

अतः सार ये है कि प्रेम तो किया जाए परन्तु निःखार्थ भाव से क्योंकि ऐसा प्रेम कभी दुःखों का कारण नहीं बनता बल्कि जीवन में सम्पूर्णता का अहसास कराता है। जिसमें आपके पास दूसरों को देने के लिए वो सब है। जिसे वो इस खार्थी समाज में ढूँढ़ रहे हैं और आपके पास वो है, जिसमें आप अपने इस जीवन में तलाश रहे होते हैं-“शांति और सम्पूर्णता”, क्योंकि प्रेम का वास्तविक अर्थ यही है- “निःखार्थ प्रेम”

32. वादों पर टिकी जिंदगी (जीवन)

आमतौर पर जीवन में आशा और विश्वास की शुरुआत वादों से शुरू होती है, जीवन में उन्हीं वादों का पूरा होना या न होना ही वादे के पेचीदापन से जीवन को रोचक बनाता है। हर रिश्ते में वादे का अपना एक अहम् किरदार रहता है।

पुत्री का माता से पुत्र का पिता से, बहन का भाई से, पति का पत्नी से किया गया वादा जीवन के रिश्तों को मजबूत बनाता है। उन्हीं के वादों के आधार पर पत्नी और पति सात जन्मों तक साथ निभाने पर भरोसा करते हैं।

पारिवारिक रिश्तों से बाहर निकलकर सार्वजनिक जीवन में भी वादों का अपना एक अहम् किरदार है। एक नौकरी पेशा व्यक्ति का अपने बॉस से व्यवसाय वह लक्ष्य प्राप्ति को लेकर किया गया वादा... ये बस इस जीवन में अपनी अहम् भूमिका दर्शाता है। जीवन के कई पड़ाव पर इस वादों में भी पेचीदापन आता है। जिसके फलस्वरूप कुछ वादे समय पर पूरे नहीं हो पाते और ऐसा रिथित में जीवन के गंभीर संकट से भी गुजरना पड़ता है खट्टी-मिट्टी जिंदगी में रोमांचकता को बरकरार रखने के लिए वादे जरूरी है।

“कसमें वादे प्यार वफा सब बातें हैं, बातों का क्या?
कोई किसी का नहीं ये झूठे नाते हैं नातों का क्या?

33. असंभव की सीमा

"Act But Don't React"

जीवन की किसी भी हालात में जब आप गुजर रहे हैं उस समय उस कार्य को समर्तित होकर करो और सफलता के सारे पड़ाव पार कर दो, उस कार्य के फलस्वरूप किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया का प्रभाव ना दो, क्योंकि वो प्रतिक्रिया हमारे अंदर ऐसे भाव लाने का प्रयास करती है। जिससे हमारा उस कार्य को करने की प्रति विश्वास कम हो।

जीवन में बड़े से बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आपको असंभव की सीमा को पार करना होगा। जहाँ संभव के भाव दिखते हों वो लक्ष्य कभी बड़ा नहीं हो सकता। जहाँ लोगों का किसी कार्य के प्रति संभव का ढृष्टिकोण ही आपको बड़ी जीत दिला सकता है। मानवीय जीवन में इरादे मजबुत हो तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है।

कार्य करने वाले के आत्मविश्वास पर सर्वस्व निर्भर करता है कि हम किसी लक्ष्य प्राप्ति के प्रति कितने गंभीर हैं तथा उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किस हद तक मेहनत करने का तैयार है। असंभव की किस सीमा को छू सकते हैं। वही लक्ष्य निर्धारण का मुख्य पैमाना होता है।

34. अकेलेपन का मर्म

जीवन एक यात्रा है। जिसमें अच्छे बुरे व सही-गलत, हर प्रकार के दौर से गुजरना पड़ता है। कभी कभी आदमी जीवन के प्रति गंभीरता को ऐसे अंदाज में ले लेते हैं जहाँ वो लक्ष्य को प्राप्त करने में शायद सफल हो जाए परन्तु एक मुकाम पर आकर खुद के साथ किसी को न पाकर हताश हो जाते हैं। उस वक्त उसमें जो अकेलेपन का मर्म होता है वह जीवन का सबसे कठिन दौर होता है।

एक पल, एक क्षण व एक दौर ऐसा आता है। जब वह अपनी बीती जिंदगी को अगर याद करें तो अपने आज को पूर्ण रूप से अकेले व खाली पाता है और उस अकेलेपन की व्याकुलता उस इंसान को अंदर तक इकजोर ढेती है और उस दिन उसे अहसास होता है कि उसने उस ‘आज’ का बनाने में भूतकाल में ना जाने क्या-क्या खो दिया है। उन खोयी हुई चीज़ों का मूल्यांकन करना उतना ही कठिन जितना उन्हें भविष्य में वापिस पाने का प्रयत्न!!

जीवन के न कठिन दौर ही इंसान की मजबूती और विश्वास के पैमाने को तय करते हैं। जीवन में अकेलेपन के मर्म से बड़ा प्रतिद्वंदी कभी कोई नहीं हो सकता!!

35. समाजवाद या राष्ट्रवाद

एक जिम्मेदार व्यक्ति जब अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी को पूरा कर लेता है तब उसकी जिम्मेदारी अपनी समाज व अपने राष्ट्र के प्रति शुरू हो जाती है। अपने निजी विकास के घटकों के प्रति कार्य करना उसका मौलिक अधिकार होता है। जब एक व्यक्ति किसी समाज का अभिन्न अंग है तो यह महत्व रखता है कि समाज के विकास में उसका किस प्रकार से योगदान है।

सामाजिक विकास को सरोकार करने के बाद राष्ट्र के प्रति भी अनगिनत जिम्मेदारियां प्रत्येक इसांन की बनती हैं, जिसमें राष्ट्र के आत्मसम्मान के प्रति राष्ट्रहीत के कार्यों पर कार्य करने की जरूरत। एक व्यक्ति से बदलाव के पल आए न आए पर आज तक जो भी बदलाव की बयार देखने को मिली वो किसी न किसी एक व्यक्ति के विचारों का ही उन्माद था।

एक जिम्मेदार नागरिक के लिए समाजवाद व राष्ट्रवाद दोनों का संतुलन लेकर चलना जरूरी है। तभी वो अपने जीवन के साथ न्याय कर पाएगा। व्यक्तिगत विकास में निखार लाने के लिए समाज के साथ राष्ट्र के प्रति भी निर्भिकता से निरचार्थ भाव के साथ कार्य करने की जरूरत है।

36. रोमांचकता का पुलिदा

जीवन बेशक एक डोर है जीवन को अलग-अलग श्रेणियों में जीने वाला मानव अपने आप से खुद जिंदगी का एक बहुत बड़ा घटक है। अपने जीवन के उतार-चढ़ाव में सुख और दुख दोनों का संतुलन तरीके से सहेज कर जीवन के पलों में से खुशी और गम को बराबर रखते हुए अपना जीवन यापन करता है।

मनुष्य के जीवन में जब खुशी के अवसर होते हैं तो उसके अंदर एक अलग प्रकार का रोमांच होता है और उस रोमांचकता के आधार पर वह जीवन के तमाम उन सपनों को पूरा करने की ठान लेता है, जो उसने कभी किसी पल में देखे होंगे वहीं दूसरी तरफ जब मनुष्य का सामना दुखों से होता है तो वह टूट सा जाता है, निराशा हो जाता है।

खुद से संभावनाएं तलाशने शुरू कर देता है कि किस प्रकार वह इस दुख से बाहर निकल कर दोबार प्रयास के अंदर प्रयासरत होकर सफलता की सीढ़ी को छूकर सफलता के नए आयाम स्थापित कर सकता है।

मनुष्य हर पल हर दृष्टि में और हर हाल में दुख को किनारे कर के खुशियों की खोज में प्रयासरत रहता है।

यही जीवन की सार्थकता है और यही जीवन का सच है। व्यक्ति रोमांचकता के आधार प जीवन के कठिन समय में देखे गए दुख को भी सहन कर जाता है और फिर निकल पड़ता है सुख की खोज में खुशी की खोज में, सम्मान और आत्मविश्वास की खोज में...

जिस तरह से अपने सपनों को टूटने पर मायूस होने वाला व्यक्ति दुबारा सफलता की आस में प्रयास नहीं छोड़ता है ठीक उसी प्रकार उस व्यक्ति के आत्मविश्वास और आगे बढ़ने की ललक एक नए कार्य सिद्धि की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है, अनुग्रहित करती है।

यह मानवीय प्रवृत्ति ही है जो दुख के बाद सुख की तलाश में व्यक्ति को आगे बढ़ने की ओर प्रेरित करती है और इसे मानवीय प्रवृत्ति के आधार पर ही मनुष्य अपने जीवन में नए सपनों को संजोकर निकल पड़ता है।

37. क्रोध का जमावड़ा

वृद्धत्व रूप का, आशा धीरज का...
मृत्यु प्राणी का, ईर्ष्या धर्मचरण का...
क्रोध लक्ष्मी का, कुसंगति चरित्र का...
काम शर्म का और अभिमान सभी का नाश करता है।

यूँ तो जीवन में कोई भी कार्य इच्छा के अनुरूप न होने पर गुरसा हमारे अंदर अपना स्थान ले लेता है। जिस तरह सुंदर से सुंदर रूप का नाश व्यक्ति की ढलती उम्र कर देती है आशाएं धीरज का व क्रोध लक्ष्मी का नाश कर देती है। इंसान जब क्रोध के पड़ाव से गुजर रहा होता है तब वह सही गलत का आंकलन नहीं कर पाता और इसका हर्जाना व अहसास क्रोध के शांत होने पर होता है।

पितामह का ऐ ही पाप था कि समय पर क्रोध नहीं कियाव जटायु का एक ही पूण्य था कि उसने समय पर क्रोध किया। परिणाम पितामह को बाणों की शैया मिली और जटायु को भगवान श्री राम की गोद, क्रोध भी तब पूण्य बन जाता है जब वो धर्म के लिए किया जाए व सहनशीलता भी तब पाप बन जाती है जब वो धर्म को बचा नहीं पाता।

आज के समय में ज्यादातर लोग सोचते हैं कि धैर्य कमजोरी है परन्तु ऐसा सोचना गलत है। धैर्य व संयम मजबूती की निशानी है जबकि क्रोध कमजोरी का प्रतिक है।

भगवान श्री राम ने रावण को प्रेमपूर्वक समझाया किंतु अंत में रावण का वध करना ही पड़ा। श्री कृष्ण को अन्याय व अत्याचार के खिलाफ सुदर्शन चक्र उठाना ही पड़ा व रथयं के मामा कंश तक को ख़त्म करना पड़ा। शांति से हल न निकलने की स्थिति में हमें राष्ट्र व धर्म की रक्षा हेतु क्रोध व हिंसा का सहारा लेना ही पड़ता है।

क्रोध अपने आप में ज्वार है। खोलते हुई पानी में जैरे प्रतिबिम्ब नहीं देखा जा

सकता ठीक उसी प्रकार क्रोध की स्थिति में सच को नहीं देखा जा सकता।

क्रोध और आंधी दोनों एक समान होते हैं। शांत होने के बाद ही पता चलता है कि नुकसान कितना हुआ है। एक सुखद जीवन के लिए सदा मुर्कुराते रहिए। आपके चहरे पर हंसी न केवल आपके स्वास्थ्य अपार्टु कईयों के आंकलन को परत कर देगी।

38. हर पल-एक शिक्षक

जिंदगी हर पल इंसान को एक नया सबक देती है और हर पल इंसान कुछ ना कुछ सीखता है। वैसे तो हमारे जीवन के सबसे पहले शिक्षक हमारी माता होती है जो हमें जन्म देती है और पाल पोषकर बड़ा करती है और हमारे दूसरे शिक्षक हमारे पिता हैं जो हमारे सपनों को पूरा करने के प्रयासरत रहते हैं और जीवन की हर मुश्किल से लड़ने के लिए हमें प्रेरित करते हैं। इसके पश्चात हमारे शिक्षक व मित्रों की भूमिका हमारे जीवन में शिक्षक के रूप में होती है। वैसे तो जीवन के प्रत्येक पल हमारी सफलता व असफलता के आधार पर हमें एक नई सीख देते हैं।

जीवन का हर उतार चढ़ाव एक नया पाठ पढ़ाता है व हमारे जीवन में एक नया अध्याया लिखकर जाता है फिर भी जीवन का हर मोड़ व संकट का समय उस संकट से जूँझने को प्रेरित करता है व आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कुछ पल आते हैं जब अपना आत्मविश्वास खो बैठता है अकेला सा पड़ जाता है। चारों तरफ आशाओं के रास्ते बंद से हो जाते हैं। उस समय ये समय का पहर ही उस खोए हुये विश्वास को वापिस लौटाता है। सकारात्मक व्यक्ति अपने जीवन के हर पल से कुछ न कुछ सीख लेता है।

39. अपनेपन की लड़ाई

“बात अपनों की होती तो शायद,
कोई बात बुरी न लगती...
सवाल अगर अपनेपन का होता तो,
आज लड़ाई हक् की होती।”

अपनेपन की लड़ाई में अक्सर जिसके दिल में अधिक प्यार होता है वो हार जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अंहकारी नहीं होता, कभी कभी हम किसी के हक् और अपनेपन की लड़ाई को उनका अहंकार समझने की भलू कर लेते हैं और इससे एक अच्छे व सच्चे व्यक्ति को अपने जीवन से दूर करते चले जाते हैं। आज जीवन की सिति यही है अपनेपन की लड़ाई है पर केवल हक् तक सीमित है। उसमें अपनेपन का अहसास नहीं है।

मसलन इस लड़ाई में कहीं न कहीं खार्थ भी हावी हुआ है। जिसमें अपनापन कम और खार्थ ज्यादा दिखाई देता है। इस लड़ाई में हक् और अधिकार को महत्वहीन करते हुए अपनापन कहीं खो सा गया है।

दिखावे के इस दौर में अपने होने का अहसास करवाते हैं पर अपने होने का अहसास कभी नहीं करवाते। जीवन के कुछ दौर असमझस के मुकाम पर होते जहां त्वरित गति से अपने और पराये कि परिकल्पना करना आसान नहीं है। सार्थकता की होड़ में सत्य को सामने लाना कठिन है।

40. रिश्तों की गहराई

कहानी:-

अकबर के दरबार में उसके नौ कोहिनूरों में तानसेन भी एक कोहिनूर था, जो अकबर के दरबार में अपनी वाणी की छटा बिखेरता था। एक बार अकबर ने तानसेन से उसके गुरु की आवाज़ सुनने की इच्छा जताई। तानसेन के गुरु हरिदास बहुत अच्छे गाते थे। एक बार तानसेन अकबर को लकर अपने गुरु हरिदास की कुटिया में गए। वहां अकबर को तानसेन के गुरु हरिदास की वाणी से परिचय हुआ।

अकबर बहुत खुश हुआ और अपने दरबार में आकर तानसेन से धीरे से कहा कि तानसेन तुम्हारे गुरु के आगे तुम्हारी आवाज़ कुछ भी नहीं है। इस पर तानसेन मुरक्कुराते हुए बोले- ‘मेरी आवाज़ उनसे अच्छी होगी भी कैसे ? मैं इस पृथ्वी के राजा के लिए गाता हूँ और वो इस ब्रह्माण्ड के बादशाह यानि स्वयं भगवान के लिए गाते हैं।

सारांश:-

जिंदगी में आसपास का वातावरण पूरा मौका देता है स्थितियों को बदलने का। यह हम पर निर्भर करता है कि हम सकारात्मक रूप से किस तरह रिश्तों के भाव व सम्मान को समझ पाते हैं। अब जीवन इस कदर ही आगे बढ़ रहा है। जहाँ रिश्तों की डोर को समझना मुश्किल हो रहा है। रिश्तों की उम्र छोटी होती जा रही है। ये अल्पायु के रिश्ते मानवीय व्यवस्था को चोट पहुँचा रहे हैं।

रिश्तों का आंकलन भावनाओं की गहराई को समझे बिना निर्णय लिये जा रहे हैं। जिन सम्बन्धों को पेड़ की तरह सींचा जाता है, उन्हीं सम्बन्धों को एक ही पल में दरकिनार कर दिया जाता है। स्वार्थ की परिपाटी हावी हुई है पर साथ-साथ स्वाभिमान का भी स्तर गिरा है, जिसके तहत सम्बन्ध खतरे के निशान से ऊपर चल रहे हैं।

थैर्य व संयम आज के खान-पान में ना के बराबर है। इस वजह से गहरे से गहरे रिश्ते को भी चोट का सामना करना पड़ता है। सहन करने की क्षमता खत्म सी हो रही है। इस स्थिति में सभी का मौलिक कृतव्य बनता है कि रिश्तों की संजीदगी को बहेतर तरीके से समझे, रिश्तों के महत्व को शालीनता से समझने की जरूरत है।

फलस्वरूप निरचार्थ भाव से रिश्तों को समझा जा सके व एक दूसरे का मान सम्मान सजग रहे। ये प्रयास भाव के साथ होना चाहिए।

41. वर्तमान परिप्रक्ष्य का असर

“रस्सी जैसी जिंदगी, तने तने हालात,
एक सिरे पर ख्वाहिशें, दुने पे औकात...।”

आज का वर्तमान परिदृश्य यही है कि जिंदगी एक डोर के समान है, जिसमें हालातों को प्रभावित करना कठिन है। एक ओर जहाँ दिल में ख्वाहिशें व महत्वकांक्षाए पैदा हो रही हैं वहीं दूसरी ओर हैरियत भी उन सपनों को वर्तमान हालातों के आधार पर पूरा होने में अवरोधक बन रही है। जीवन के आज के हालात यही है इंसान को अपने सपनों को पूरा करने के लिए किसी को भी कुचलना पड़े तो वो हिचकना नहीं है।

भावनाओं का मर्म मिट सा गया है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने सपनों को पूरा करना ही प्राथमिकता है। भले ही उसकी कीमत रिश्तों की गहराई को खत्म करना ही क्यों न हो? अपने सपनों को सच करने के एवज में रिश्तों को तार तार करने से भी नहीं चूक रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों का असर इतना हावी हो गया है कि विश्वास की मर्यादा घट सी गई है। भरोसे का पैमाना कम सा हो गया है। आर्थिक व व्यक्तिगत जीवन में भरोसे की मात्रा खत्म सी हो गई है। आज का परिप्रेक्ष्य आज के खान-पान व रहन-सहन के आधार पर पूरी तरह से बदल सा गया है।

“ये मुमकिन नहीं कि सब लोग ही
बदल जाते हैं...
कुछ हालात के सांचों में भी
ढल जाते हैं...!!

ऐसे तो आज का दौर स्वभाव के बदलाव का दौर है। व्यक्ति अपनी जखरत के अनुस्प अपना पाला बदल रहा है। कुछ जखरत के आधार पर बदल रहे तो कुछ मजबूरियों के आधार पर।

ये संभव नहीं है कि हर व्यक्ति बदल जाता है। क्योंकि हर व्यक्ति अपनी जरूरत के हिसाब से अपने ईमान को नहीं मार सकता। परन्तु आसपास का वातावरण इस कदर हो गया है कि व्यक्ति के पास दो ही विकल्प हैं कि या तो आप समय अनुख्य बदल जाओ या फिर जो चल रहा है उस आधार पर अपने आप को ढाल लो जो स्थितियां हैं, उसके अनुख्य खुद अपने आप का बना लो जिससे ना ही आपके पास किसी प्रकार की शिकायतें रहेंगी और ना ही कुछ हासिल करने की महत्वकांक्षा...।

“अपने हालात का खुद पता नहीं मुझको,
मैंने औरों से सुना है के मैं परेशां हूँ आजकल!!

42. सच की गवाही

कहानी:-

एक बार एक गांव में एक नई सरकारी नियुक्ति हुई। सरकारी कार्य से गांव से दूर शहर में उसे नौकरी लगी। थोड़े दिन बाद माँ ने बेटे को फ़ोन किया और पुत्र से सभी हाल चाल पूछा तो बेटे ने जखरत के हिसाब से उचित पगार का आश्वासन दिया। इस पर माँ ने कहा कि बेटा ये कमाई एक नंबर की है या दो नंबर की है।

बेटे ने इसे एक नंबर की बताई। इस पर माँ ने कहा कि गांव के ही एक सरकारी नौकरी लगे लड़के के बक्सा भर-भर के पैसे आते हैं। इस पर बेटे ने माँ को बताया कि वो दो नंबर की कमाई है। जिसकी उम्र ज्यादा लम्बी नहीं है। कुछ दिनों बाद दो नंबर की कमाई वाले लड़के के घर पर पुलिस ने छापा मारा ओर सारे बक्से जो पैसे से भरे हुवे थे। व सारी अवैध सम्पति साथ ले गए। इज्जत गयी वो अलग।

इस पर एक नंबर की कमाई वाले की माँ के हाथ पांव फूल गए। उसने बेटे को फ़ोन करके इस घटना की जानकारी दी। एक बार फिर बेटे ने कमाई की पुष्टि की। इस पर पुनः बेटे ने इसे झानदारी की ही बताई। यह सुनकर माँ की आँखों में अलग सी चमक थी और चेहरे पर खुशी के भाव थे। जो कि एक नंबर ने दो नंबर पर जीत दर्ज की थी सच की जीत का एक अच्छा उदाहरण है।

जीवन सही मायने में तो सच का गवाह है पर आज के दौर में स्वार्थ व भेदभाव ने सच को ढबा सा दिया है। सच की गवाही हेतु बने इस जीवन में अविश्वास ने भी अपनी जगह बनाई है। भरोसे की जगह धोखे ने भ अपना स्थान बनाया है।

जीवन का मूल: मौलिक धर्म ये होना चाहिए कि हम सदाचार से परिपूर्ण हो परन्तु अभी के समय में लोगों का खान-पान बदला है, परिवेश बदला है। इस स्थिति में जीवन का

महत्व घट सा गया है। लोगों ने बदलाव की राह को प्राथमिकता दी है। बदलाव के नजरिये को बल मिलने से पाश्चात्य व्यवस्था का प्रसार ज्यादा हुआ है। जिसकी बढ़ौलत संस्कारों का सरोकार होना कठिन सा हो गया है।

जिंदगी की गहराई कहीं कहीं अत्यधिक गहरी सी हो गई है। फलस्वरूप कई बार जीवन महत्वहीन व व्यर्थ सा लगता है, पर एक सदाचारी जीवन के लिए निर्भिकता से आगे बढ़ना होगा। आत्मविश्वास व निःरता ही जीवन के अहम् पड़ावों को पार करने में मददगार साबित होगी। जीवन खुद एक करौटी हैं। आंतरिक परीक्षा है। जिस परीक्षा में सफल होने के अलावा दूसरा कोई विकल्प ही नहीं रह जाता है।

जीवन के मूल्यों को भली भांति तरीके से समझ लेना ही जीवन की सार्थकता है। यही जीवन के विकास की सीढ़ी है।

43. आत्मा की पैरवी

‘मौत का कैसा डर, मिनटों का खेल है,
आफत तो जिंदगी है, बरसों चला करती है।

उक्त शब्दों के माध्यम से जिंदगी और मौत के रिश्तों को परिभाषित करने का प्रयास किया है। जीवन एक संघर्ष भरी जिंदगी में उतार-चढ़ाव व अच्छे बुरे वाकये-घटना अपना अपना स्थान रखते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षण इस कदर सामने आते हैं जिनमें सही और गलत का फैसला हमें रखयं को करना पड़ता है। यह सही और गलत की पहचान करने में सबसे बड़ी सहयोगी की भूमिका निभानी है। हमारी आत्मा, हमें इजाजत देती है व पहचान करवाने में भी कारगर साबित होती है।

जीवन में ऐस बहुत से पड़ाव व घटक आते हैं जब हम उस पल को दिल और दिमाग से भले ही ग्रहण करने की इजाजत देती है और जखरत पड़ी तो उस पल की पैरवी भी करती है। उस पल से अच्छे व बुरे दोनों पलों से परिचय करवाती है। हमारे जीवन की सार्थकता को सिद्ध करने में हमारी आत्मा का बहुत बड़ा किरदार रहता है।

कहते हैं जिसकी आत्मा जीते जी मर जाती है वो मनुष्य श्रेणी से निकलकर वर्णशंकर की श्रेणी में आ जाती है।

44. अपनों की तरफदारी

“जीवन थोड़ा है... करने योग्य बहुत कुछ है,
प्रमाद व आलस्य जीवन के सबसे बड़े शत्रु हैं।”

वैसे तो जिंदगी अपनी महत्वकांक्षाओं को पूरा करने व स्वार्थ की लोलुपता में ही बीत जाती है। परन्तु जीवन के महत्व को सारगर्भित करना होता है जिंदगी के अभिनय में कछ ऐसे मोड़ भी आते हैं जब दुनिया द्वारा हमें गलत ठहराने का प्रयास किया जाता है। परन्तु हमारे कुछ अपने हमारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहते हैं उन परिस्थितियों में हमारे मनोबल व आत्मविश्वास को एक प्रभावशाली वेग मिलता है, जो हमारे जीवन की अलौकिकता को चमत्कार बनाता है।

ऐसी ही परिस्थितियाँ कभी-कभी हमारे चाहने वालों के साथ भी आती हैं। उन हालातों में उनके साथ हमारा समर्थन भी उनके मनोबल को बढ़ाता है। अपनों की तरफदारी हमारे जीवन के मौलिक दायित्वों को पूरा करती है। अपनों की तरफदारी हमें भावनात्मक अहसास कराती है तथा व्यक्तिगत संबंधों से परिचय करवाती है।

रिश्तों की मधुरता से प्रत्यक्ष मिलवाती है। लक्ष्य सिद्धि की ओर अग्रसर इस जीवन में महत्वपूर्ण व करने योग्य कार्य बहुत हैं, परन्तु प्रमाद व आलस्य ने इस जीवन में बड़े से बड़े कार्य को भी रोकने में मुखरता हासिल की है। अपनों की तरफदारी ही एक सच्चे सहयोगी की भूमिका निभानी है।

45. अनुभव एक सीख या धोखा

“इंसान खुदा बनने की कोशिश में है मशरूफ,
लेकिन ये तमाशा भी खुदा देख रहा है।”

जिंदगी का हर मोड़ हमें एक नए बौद्ध पाठ से अवगत करवाता है। भावनाओं व रिश्तों में बंधी ये जिंदगी पग पग पर नए अनुभवों से परिचय करवाती है। जीवन की मार्मिक स्थिति इस कदर हावी हो जाती है कि कभी कभी हम हमारे नैतिक कर्तव्यों से हटकर भी कोई कदम उठा लेते हैं।

जिंदगी में सबसे संवेदनशील समय बचपन का होता है। बचपन में बीते पलों में से हम सीख लेकर युवावरथा में आगे बढ़ते हैं। बचपन में लगी छोट भी हमें हमारे बुद्धापे तक उस पल की याद दिलाती है। बचपन में मिला रनेह व तृष्णा भी हमारे जीवन में बहुत बड़ा किरदार निभाते हैं। रनेह से सहनशीलता व तृष्णा से हीनभावना का विकास होता है। जिसकी वजह से बचपन की स्थितियों का प्रभाव पूरे जीवन पर पड़ता है। जीवन बेशक एक ऐसा अनुभव है जिसमें जीवन के हर पड़ाव का अपना एक विश्लेषण शामिल है।

जिंदगी में कई मोड़ निर्णायक आते हैं। वो मोड़ काफी सीख दे जाते हैं। जिंदगी के काफी मोड़ धोखे से लिप भी होते हैं। वो पल भ जीवन में बड़ी सीख को जन्म देकर जाते हैं। इंसान जिंदगी के अंदर आए उतार चढ़ाव व उनके घटकों के माध्यम से शिक्षा जखर लेते हैं। पर पग पग पर मिले धोखे भी इंसान को कमजोर कर देते हैं।

शैक्षणिक जीवन के समय शिक्षा में सफलता असफलता व महत्वकांक्षा के अनुस्प परिणाम न पाने पर पीड़ा व अच्छे परिणाम पर जीवन के आगे के प्रारूप को लेकर चिंता भी एक नए पड़ाव की ओर अग्रसर रहती है। युवा उम्र में जीवनसाथी के चयन से पारिवारिक जिम्मेदारियों के बोझ से बौद्ध पाठ व व्यवसाय व नौकरीपेशा में प्रतिरप्द्याभी एक नए अनुभव को पैदा करती है। ये जिंदगी जितनी रोचक है उतनी जटील भी। जिसे बड़ी सहजता

के साथ जिया जाता है। सांसारिक जीवन में सपनों को साकार करने की महत्वकांक्षा के साथ आर्थिक रूप से सृदृढ़ता से भी जीवन के अनुभव को ताजा करती है। आर्थिक काटो कटी भी नए नए अनुभवों को विकसित करती है। पारिवारिक जिम्मेदारियां भी जीवन के मौलिक विषयों पर हावी रहती हैं।

जीवन की यात्रा में एक पड़ाव ऐसा भी आता है जब जीवन का तलपट व दिनचर्या प्रतिदिन एक सी हो जाती है, जिसमें संघर्ष के प्रति संजीदगी लगभग समान सी स्थिति में होती हैं संक्षेप में जीवन भरोसे पर मात यानि धारों से सरोकार हो जीवन स्वरूप अनुभवों का ही घरोंदा है। जो जीवन के प्रति बेरुखी सी दर्शाता है तथा जीवन के प्रति रोचकता को भी सिद्ध करता है।

46. जरूरत की जवाबदारी

स्वार्थः स्व+अर्थ की सरंचना जीवन के कई पड़ाव लिखने में सहयोगी है। जीवन में प्रत्येक रिश्ते अपनी अपनी भूमिका बांधकर ही अपना स्थान ग्रहण करते हैं। उन रिश्तों में ज्यादातर रिश्ते स्वार्थ में फलदायी आस में पलते हैं जिन्हें आपके निकट रहने से अपने स्वार्थ को पूरा होने की संभावना रहती है। अपने स्वार्थ की परिपूर्णता तक आपके सबसे बड़े अंगरक्षक बनकर आपके समकक्ष पेश आने वाले आपके ये अपने केवल इंतजार करते हैं। अपने स्वार्थ को सिद्ध होने तक का अगर स्वार्थ सिद्धि तक ही रहेगा।

जिस दिन समय ने करवट ली और उनके स्वार्थों को पूर्णविराम लगाना शुरू हुआ, समझो उस दिन से आपसे निकटता का अहसास करवाने वाले आपके ये सबसे बड़े शुभचिंतक आपके लिए ही खड़ा खोदना शुरू कर देंगे। आपके हर सहयोग व विपरित समय के साथ को किनारे रखकर आपके हालात व आपकी मजबूरी का पूरा फायदा उठाने में आगेवानी करेंगे। यही जीवन का सार्थक सत्य है, जिसमें जवाबदारी के केवल जरूरत तक ही सीमित है। जरूरतें ख़त्म जिम्मेदारी ख़त्म आगेवानी।

“फासलों का अहसास तब हुआ,
जैब मैंने कहा - मैं ठीक हूँ
और उसने मान लिया।”

इन शब्दों का भावार्थ सीधे-सीधे जीवन के घटकों पर लागू होता है जब जिम्मेदारी केवल जरूरत से संबंधित है। जवाबदारियों का अहसास केवल मात्र जरूरतों पर आधारित है। जरूरतें हर रिश्ते नाते व प्रेम व रनहे पर हावी हो चुकी हैं। जिनको पुरा करने के लिए इंसान हर कदम पर हर नियंत्रण रेखा को पार करने को तत्पर है।

आज स्थिति यही है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी उलझनों से ही बाहर नहीं निकल पा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी ढौड़, ढौड़ रहा है। मंजिल की तरफ ये ढौड़ जीवन के

काफी रिश्तों को पीछे छोड़ रही है।

जिस दिन आपकी पहचान आपके
‘विचारों व सिद्धांतों’
को छोड़कर
आपके पहनावे व रहन सहन से
होने लग जाये मतलब समझ लेना...
आपके साथ
“कुछ गलत होने वाला है”

47. कर्तव्यों का हनन

“दुँड़ना ही है तो परवाह करने वालों को ढूँढ़िये,
इरत्तेमाल करने वाले तो खुद ही आपको ढूँढ़ लेंगे।”

जीवन की स्थिति यही है कि हम दिखावा करने वालों की तरफ प्रभावित होते हैं। तथा सादगी की तरफ हमारा ध्यान नहीं जाता है। फलस्वरूप दिखावा हमें तकलीफ देता है और सादगी का भाव रखने वाला हमसे दूर। आज के जीवन का धर्म यही है कि आप उनसे संपर्क रखें जो आपकी परवाह करें। आपकी चिंता करें। अपने खुद के काम हेतु आपका इरत्तेमाल करने हेतु लोग आपके पास खुद आ जायेंगे। आपका इरत्तेमाल करने वाले आपको खुद ढूँढ़ लेंगे।

कहानी

एक गांव में एक परिवार रहता था। दो भाई अपने माता पिता व परिवार के साथ रहते थे। बड़ा भाई शहर में रहता था और छोटा भाई माता पिता के साथ गांव में रहता था। बड़े भाई ने जैसे तैसे ईमानदारी से पैसा पैसा जोड़कर गांव में एक खेत खरीदा और भावनाओं में बहकर खेत अपने पिता के नाम से कर दिया।

थोड़े दिन बाद पिता का अकस्मिक निधन हो गया। घर में पैसों की जखरत थी, तो बड़े भाई ने वो खेत बिक्री में रखा परन्तु भारतीय कानून के अनुसार वो खेत अब पिता के ना रहते पैतृक सम्पत्ति बन चुका था। जिसके हिस्सेदार अब बड़े भाई के साथ माँ, छोटा भाई व एक छोटी बहन भी थी।

बड़े भाई ने सबके सामने हक त्याग भारतीय कानून के अंतर्गत हक ना लेने का सहमति पत्र के लिए प्रस्ताव रखा। माँ और भाई ने खुशी-खुशी हकत्याग के लिए कानूनी रूप से सहमति दे दी। छोटी बहन ने अपने हक को हासिल करने की इच्छा जताई और वो भी पूरी रकम की आधी हिस्सेदारी माँगी। आपसी मन में फर्क महसूस हुआ।

पारिवारिक हालात भी तंग हुए। काफी समझाईश हुई पर बहन अपनी मांग पर अडिग रही। इधर भाई को पैसों की सख्त जखरत थी फिर थक हारकर बड़े भाई को मजबूरन संम्पति का आधा हिस्सा जितनी रकम बहन के समुराल वालों को देना पड़ा।

सारांश:-

व्यक्तिगत स्वार्थ कभी कभी इतना हावी हो जाता है कि इंसान सारे कर्तव्यों को ताक पर रख देता है।

‘‘किसी की फितरत का पता होता अगर,
दूध हम रखते न सांपों के लिए।’’

जीवन में ऐसे पड़ाव बहुत आते हैं जब इस प्रकार रिश्तों को तार तार किया जाता है और प्रत्येक कदम पर रिश्तों का हनन किया जाता है। कर्तव्यों का चीरहरण कर अपने स्वार्थों को पूरा करने की इस होड़ ने भावनात्मक पहलुओं को ढबा सा दिया है। फलस्वरूप स्वार्थ काफी पहलुओं पर हावी हुआ है।

48. नैतिकता से किनारा

सुविधाओं से प्राप्त इस जीवन में मुख्य रूप से मानवता को भी एक गहरा सदमा पहुँचा है। २१ वीं शताब्दी के इस समय में लोग दिल से नहीं दिमाग से कार्य करने लगे हैं।

आज का खान पान व रहन सहन बदला है। जिसकी बदौलत काफी वाकिये ऐसे देखने को मिलते हैं जहाँ लोग नैतिकता के आधार पर भी जिम्मेदारी लेने से भागते हैं-

दिया कुछ इस तरह से जल गया
कि पूरे घर में कालिख मल गया
ढलेगी बाढ़, तो आयेंगे नेता
ये मत समझो कि ख़तरा टल गया
हरीं दुनिया के खींचे थे जो नक्शे
हुई मुद्रदत वह कागज गल गया
दशहार देखकर खुश है ये बच्चे
समझते हैं कि रावण जल गया।

माँ बाप जब अपने पुत्र को बड़ा करते हैं, पढ़ाते हैं। जीवन के हर पहलू से लड़ने के लिए मजबूत बनाते हैं। एक सफलतम व्यक्तित्व तक सक्षम बनाते हैं, तो बेशक उम्मीद करते हैं कि बुढ़ापे के समय उनके सपनों व उम्मीदों का सहारा उनका बेटा बने पर हो इसका उल्टा रहा है।

पुत्र अपनी उपलब्धियों को प्राप्त करने के बाद माँ बाप की जिम्मेदारी से किनारा कर लेता है। हमारे आसपास हम ऐसे मामले देखते हैं जिसमें पुत्र अति शिक्षित होता है और माँ बाप मजबूर, अब समझ ये नहीं आता कि परवरिश में कमी रही है या शिक्षा का स्तर गिरा है। पर वार्तविकता ये है कि...

नैतिकता जिम्मेदारी लेने की हिम्मत जखर कम हुई है। जहाँ कोई आगे आकर अपनी आत्मा की आवाज को साक्षात् मानते हुए जिम्मेदारी को अपने हाथ ले व पूरी तरह से निभाए।

“न जाने कौन कब लूट ले राह में,
काफिले से अलग मत रहा कीजिए।”

49. मानवता से दूरी

“मशस्फ है यहाँ लोग, दूसरों की कहानियाँ जानने में,
इतनी शिद्दत से खुद को अगर पढ़ते, तो खुदा हो जाते...।”

आज का दौर ऐसा है कि लोग केवल अपना समय ऐसी स्थिति में खर्च करते हैं। जहाँ दूसरों के बारे में चर्चा हो रही हो। दूसरे व्यक्ति के जीवन के हर उतार चढ़ाव से खबर होने को बेताब रहते हैं। समय मन व पैसा खर्च कर दूसरे की जिंदगी में झाँकने के लिए हम उतावले रहते हैं।

इतना समय व पैसा अगर खुद के व्यक्तिगत निर्माण पर किया जाए तो शायद आदर्श पुरुषों की श्रेणी में सबसे अच्छे में हम हों। परन्तु अब का दौर मानवता के मापदंड से कोरों दूर है। मानवता पग पग पर शर्मसार हो रही है। मानवता के पैमाने कमजोर हो रहे हैं।

मानवता का बड़ा रूप आपको आपके दैनिक जीवन में देखने को मिल जायेगा। जैसे अमीर का गरीब के प्रति बर्ताव भूख से मर रहे इंसान के प्रति बर्ताव बीमार के प्रति सरकारी डॉक्टर का बर्ताव ये घटक आपको अहसास दिलायेंगे कि आखिर मानवता का मापदंड कितना गिर गया है।

विवेक, संयम, चित्तशुद्धि
और पुरुषार्थ
इन मुख्य साधनों द्वारा
अपना और समाज का
कल्याण साधकर
मानवता की परमसिद्धि
प्राप्त करना ही
मानव जीवन का इयेय है।

कथा:-

जब महाभारत का युद्ध हो रहा था तब भगवान् श्री कृष्ण अर्जुन के सारथी थे। युद्ध को जीतने के लिए हर प्रकार से मार्ग दर्शन दे रहे थे। एक समय जब युद्ध के लिए अर्जुन को मैदान में जाना था। जैसे ही अर्जुन अपने सारथी श्रीकृष्ण के साथ मैदान में जाने लगे तो भगवान् श्री कृष्ण ने अर्जुन को सलाह दी कि रथ में थोड़ा नीचे होकर बैठ जाए ताकि आप देख ना पाओ कि आपके सामने कौन लड़ रहा है। वरना आप भावनाओं में बह जायेंगे और युद्ध करने में समर्थ्या आयेगी।

इस पर अर्जुन ने बाहर निकल कर देखने की जिद्द की व निवेदन किया किया। इस पर श्रीकृष्ण ने मंजूरी दे दी। जब अर्जुन ने बाहर निकलकर देखा तो आँख से आँसु आ गए। रोते-राते नीचे बैठ गए। तब श्री कृष्ण ने इसका कारण पूछा तो अर्जुन ने कहा कि “‘मेरे सामने लड़ने वाले सारे मेरे अपने हैं। मामा, फुफा, भाई, भांजा, मासा सब मेरे अपने तीर कमान लिए मेरा सिर धड़ से अलग करने के लिए आतु हैं। ये देखकर रोना आ गया।’”

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा कि “‘यही हालात है आज की दुनिया के। मानवता सिमट चुकी हैं भावनाएँ मर चुकी हैं।’”

50. मैं ही क्यों करूँ ?

हर एक को खुश करने की
कोशिश में किसी ने
‘सारे जहाँ को अपना दुश्मन बना लिया’

जीवन में प्रतिरप्थाओं का दौर इस कदर अपना स्थान ले चुका है कि प्रत्येक व्यक्ति निज स्वार्थ से उपर उठकर कोई कार्य करने में कोई भुखर नहीं हो। स्थितियाँ इनती प्रभावी हैं कि व्यक्ति हर पल में अपना हिसाब जोड़ता है।

प्रत्येक पल से क्या हासिल हुआ व क्या खोया ? क्या पाया ? इसका मूल्यांकन दर्ज होने लग गया है। दूसरों से सदैव अपने प्रति सहयोग की आशा रखने वाले हम जब भी किसी कार्य को किसी के प्रति करने का समय आता है तो हमारी सबसे पहली प्रतिक्रिया रहती है कि ‘मैं ही क्यों करूँ ?’

समान सहयोगी की भावना रखने की बजाय इस तरह के विचार भावनात्मक दुरियां पैदा करते हैं कि आज का दौर इसी मानसिकता का है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति नजरिये के अनुसार अपना व्यवहार प्रकट करता है। जिंदगी के दौर में बहुत सारे पड़ाव इस तरह के आते हैं, जब व्यक्ति की सोच निजी हो जाती हैं और उन स्थितियों में दूसरे के प्रति उससे ज्यादा कार्य करने की अभिलाषा ऐसे भाव प्रकट करवाती है। एक समृद्ध व खुशहाल जीवन के उपार्जन हेतु सांचिक विचारधारा को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ना होगा। जिंदगी को खुशहाल बनाने के लिए हमने क्या किया इसका अंदाजा लगाना बंद करना होगा।

हटा सको तो हटा दो
ये राह के पथर,
तुम्हारे बाद भी यहाँ से
कोई गुजरेगा

जीवन के अहम् मोड़ पर बहुत से कर्तव्य हमें खुद को ही निभाने पड़ते हैं। उस स्थिति में हमने क्या किया ये हिसाब लगाना उचित नहीं। बड़े परिवारों में बहुत सी जिम्मेदारियाँ किसी एक व्यक्ति को ही निभानी पड़ती है। उस स्थिति में आपसी पारिवारिक समृद्धि के लिए मेल जोल जरूरी है।

मैं ही क्यों करूँ, ये व्यक्ति के अंदर अंहकार ना केवल क्षमता का हनन करता है बल्कि ज्ञान व व्यवहार को भी नष्ट कर देता है। दया के भाव सम्पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते हैं। खुद को ईश्वर का सन्देश वाहकर समझकर किसी भी कार्य को अच्छी शिद्दत व नियत से करना चाहिए। ईश्वर की यही मर्जी होगी। ऐसा सोचकर अपने हिस्से के कार्य को करना चाहिए।

ईश्वर की यही मर्जी होगी ऐसा सोचकर अपने हिस्से के कार्य को करना चाहिए। कभी भी किसी कार्य को करते समय ऐसे भाव प्रकट ना हो जिससे किसी की किसी भी प्रकार की भावना आहात हो। भावनाओं का ख्याल रखना भी हमारे मन दयालुता की वृद्धि करता है। किसी भी कार्य को करने के पीछे मन से उसे पूरा करने की लालसा भी उस कार्य की सिद्धि को तय करती है। निर्मल मन व साफ नियत हमें हमारे लक्ष्य को साधने में सहयोग करती है तथा सफलता के बड़े पैमाने पर पहुँचकर ही राहत की सांस लेती है।

51. जिम्मेदार कौन ?

- | | | |
|-----------------------------|---|-----------------|
| गरीब घर मे पैदा हुए | - | जिम्मेदार कौन ? |
| बचपन ढंग से नहीं गुजरा | - | जिम्मेदार कौन ? |
| स्कूल अच्छी नहीं थी | - | जिम्मेदार कौन ? |
| शिक्षा पद्धति में असंतुष्टि | - | जिम्मेदार कौन ? |
| जीवनसाथी चयन में पाबन्दी | - | जिम्मेदार कौन ? |
| व्यवसायिक चुनौती | - | जिम्मेदार कौन ? |
| पारिवारिक जिम्मेदारियां | - | जिम्मेदार कौन ? |
| बुढ़ापे की चिंता | - | जिम्मेदार कौन ? |

आज के जीवन के समीकरण इन्हीं आधार पर टिके हुए हैं कि जीवन की हर स्थिति-परिस्थिति का आखिर जिम्मेदार कौन है। मैंने ऊपर जीवन के सुखद पलों की बजाय जीवन के संघर्षशील घटकों का जिक्र किया है। क्योंकि सुख के पल ना तो याद रहते हैं और ना ही सुख के पलों को याद किया जाता है।

जबकि संघर्षशील पल जीवन के हर पड़ाव पर याद रहते हैं और व्यक्ति जीवन में हमेशा संघर्षशील व दुख के दिनों का ही स्मरण करता है यही जीवनचक्र है। जिसकी बदौलत जीवन को सुख और दुख के दो भागों में बांटा गया है जो कि जीवन की सार्थकता के लिए जरूरी भी है।

व्यक्ति का जन्म चाहे गरीब घर मे हो या अमीर घर मे। इसके पीछे किसी की जिम्मेदारी तय करना मूँहता है। आध्यात्मिक पैमाने पर इसे कर्मों पर निर्भर बताया है पर कर्म भी अच्छे ही या बुरे उसके जिम्मेदार भी तो आखिर हम ही होंगे। यानि आध्यात्मिक आधार पर भी अमीर या गरीब घर में पैदा होने के जिम्मेदार भी हम खुद हैं।

जन्म का आधार ही बचपन की परवरिश तय करता है। काफी हद तक और उसी

आधार पर शिक्षा के पैमाने का आंकलन होता है। फिर भी व्यक्ति अपनी कुशलता के आधार पर शिक्षा में नए कीर्तिमान हासिल कर सकता है। इसमें यह तय करता है उसकी लगन व मेहनत किस हद तक की गई हो हालांकि जीवनसाथी का चयन अलग-अलग पंथ प संप्रदायों में अलग अलग प्रकार से हैं।

अगर मैं खुद की बात करूँ तो हमारे यहाँ जीवनसाथी का चयन आपके घर के बड़े बुजुर्ग करते हैं। महज कुछ औपचारिकताएँ बाकि रहती हैं। पर उसमें चयन पर कोई फर्क नहीं पड़ता। इस तरह के संस्कार सामान्यतः प्रत्येक समाज व उसकी रीति रिवाजों में रहता है।

इसी दौरान व्यक्ति के जीवन का अहम् दौर शुरू हो जाता है। जिसमें वह अपने कैरियर को लेकर चिंतित होता है अगर वो नौकरी करे तो भी चुनौतियां खूब रहती हैं। अगर व्यवसाय भी करना पड़ा तो शुरू से शुरू होकर व्यवसाय के पग पग पर संघर्ष व चुनौती भी अपनी भागीदारी रखती है। इन संघर्षों के माध्यम से हमारे सामने हमारे भविष्य को संवारने को चुनौती बनी रहती है। उन चुनौतियों का सामना करते-करते ना जाने कब पारिवारिक जिम्मेदारियाँ अपना पावं पसार चुकी होती हैं। जिसके तहत खुद की महत्वकांक्षाओं को ढायरे में नियंत्रित किया जाता है।

साहिल पे कितने लोग
मेरे साथ-साथ थे
तूफाँ की जद में आया
तो तिनका भी नहीं मिला

अब एक दौर आता है जीवन में जब इंसान दुबारा अपने बचपन को पाता है। जी हाँ, बिल्कुल हमारे जीवन का बचपन के बाद सबसे रोचक दौर आता है।

बुढ़ापे का एक ऐसा पल जिसमें व्यक्ति अपने जीवन के अनुभव को याद कर जीवन के सपनों को बुनने के सुखद अनुभव को महसुस करता है, पर ये जीवन के घटक हैं जो हमें हमारे हर पल को जिंदादिली से जीतने को प्रेरिति करते हैं। जीवन के अलग-अलग घटक जीवन की सार्थकता को रोचक बनाते हैं। यही जीवन का सार है।

इन सब घटकों में जो मुख्यतः खप से सवाल आता है वो ये कि आखिर इन सब घटकों के पीछे जिम्मेदार कौन... ?

साँच बराबर तप नहीं
झूठ बराबर पाप
जाके हृदय साँच
ताके हृदय आप

आमतौर पर व्यक्ति अपने जीवन को सकुशल खप से जीने की ओर अग्रसर होता है, पर फिर भी अपने जीवन में खट्टे मीठे अनुभव के साथ व्यक्ति का पाला पड़ ही जाता है। जिसके लिए हर व्यक्ति किसी ना किसी को उसका जिम्मेदार मानता है और ये अपने जीवन को आधार से जोड़ देता है। जीवन में मिली सफलता व असफलता या खुशी या गम को किसी ना किसी व्यक्तित्व से जोड़कर देखना भी जीवन का एक हिस्सा है।

वार्त्तविक स्तर पर हमारे जीवन के हर घटक के जिम्मेदार हम खुद होते हैं जो अपनी महत्वकांक्षाओं को हासिल करने के लिए ढौड़ धूप करते हैं और सच मायने में यही जीवन चक्र है जो हमें प्रत्येक क्षण से हमारे अनुभव को मिलवाता रहता है।

52. सफलता किसकी?

“सामर्थ्य से बाहर जाकर काम करना
और स्वयं की क्षमताओं का
उचित इस्तेमाल न करना
अपने ऊपर अत्याचार करने जैसा है।”

जीवन का सार अल्प होता जा रहा है, क्योंकि एक मुकाम को हासिल करने के बाद इस बात पर भी मंथन होता है कि ये सफलता आखिर किसकी है। प्रतिरप्थक के दौर में जहाँ हर किसी को आगे बढ़ने की हौड़ है वही सफलता को हासिल करने में अपनी उपलब्धता व सहभागिता का आंकलन करवाना मुश्किल है।

देश की आजादी से लेकर महाभारत का युद्ध हो या किसी सल्तनत की लड़ाई जीत किसके दम पर हुई ये तय करना थोड़ा असहज है। आज कुछ हद तक परिदृश्य बदला है पर फिर भी व्यवस्था पालक का आंकलन करना कठिन है।

सम्पत्ति सारस्वत ने मैं भारत हूँ नामक संस्था का गठन २०१७ में किया, जिसका एकमात्र लक्ष्य हर भारतीय को इज्जत व प्रतिष्ठा से जीने का हक है...हमारे लक्ष्य...हमारे प्रयास...हमारा समर्पण।

हर कदम राष्ट्र हित में हो, हम हमेशा ऐसे लोगों के ही सानिध्य में रहे जिनके लिए सात्त्विक रूप से राष्ट्र प्रथम हो, देश के संसाधनों के दुख्खयोग के खिलाफ हमेशा अपनी बात बुलंदी से रखने को अपना सिद्धांत समझते हैं जातिगत आरक्षण की समीक्षा होकर जखरतमंद को ही आरक्षण मिले भले ही वो किसी भी समुदाय का हो। ऐसे प्रयासों में भी कार्यरत है एससी एक्ट जैसे काले कानून का खुलकर विरोध किया है। तमाम भारतीय नागरिकों को सम्भाव की दृष्टी से देखते हैं। सभी के हक और अधिकारों के लिए कार्य करते हैं जातिगत ऊँच नीच प्रथा का कतर्फ समर्थन नहीं करते।

२०१७ में ही एससीएल फाउंडेशन भारत का गठन इस उद्देश्य से किया जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार के साधन खड़े कर समाज को एक नई दिशा दे सके।

